मैन्युअल

सिलाई

sidbi

ANANYA
Finance For Inclusive Growth Pvt. Ltd.

यह प्रशिक्षण पुस्तिका उन महिलाओं के प्रशिक्षण के लिए है जो अपना छोटा 'सिलाई' का दुकान खोलने और चलाने का फैसला कर चुकी हैं। यह प्रशिक्षण सात दिन तक प्रतिदिन पाँच–पाँच घंटों की अवधि में बंटा है। इस प्रशिक्षण के लिए किसी कुशल 'सिलाई' प्रशिक्षक को प्रशिक्षण में सहायता के लिए बुलाया जा सकता है क्योंकि इसका अधिकांश हिस्सा कर के दिखाने की गतिविधियों से जुड़ा है।

परिचय

सिलाई का तात्पर्य शुरू से अंत तक परिधान तैयार करने में शामिल सभी गतिविधियों है। इसमें उस व्यक्ति की माप लेना भी शामिल है, जिसके लिए परिधान तैयार किया जा रहा है; साथ ही इसमें कपड़ा काटकर, सिलाई करना, किसी भी डिजाइन और कढ़ाई के रूप में वांछित तरीके से जोड़ना, इसे प्रेश करना और अंत में एकदम सही फिटिंग सुनिश्चित करना भी शामिल है। सिलाई के लिए डिजाइन पर ध्यान देने, हाथों और मशीनों द्वारा, सिलाई के लिए उचित उपकरण का चयन करने और उसका उपयोग करने, विभिन्न प्रकार के कपड़ों के ज्ञान और सिलाई के दौरान आवश्यक देखभाल के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है, और यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि सही माप कैसे लिया जाएं ताकि एकदम सही फिटिंग का परिधान तैयार हो सके।

एक बेहतर दर्जी की मांग हमेशा बनी रहती है। अगर किसी ने अच्छा सिलाई कौशल हासिल करता है एवं धैर्य के साथ काम करता है तो वो अपना खुद का व्यवसाय शुरू कर सकता है और उस से अच्छी लाभ कमा सकता है।

बधाई! आपने अपना सिलाई का दुकान खोलने और चलाने का फैसला कर लिया है। सिलाई मशीन ऑपरेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में आपका बहुत स्वागत है।

यह सिलाई प्रशिक्षण के दौरान आप एक सिलाई मशीन ओर अन्य आवश्यक सामग्री को संचालित करने, शरीर का माप लेने, लेआउट और पैटर्न बनाने, कपड़े काटना सीखने और ग्राहकों की संतुष्टि को पूरा करने के लिए विभिन्न डिजाइन किए गए कपड़ों को सील पाने जैसे बुनियादी कौशल प्राप्त कर सकते हैं ताकि आप ग्राहकों के संतुष्टि के लिए सेवा दे सके।

प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्य

- सिलाई मशीन एवं अन्य आवश्यक उपकरणों को संचालित करने के बारे में सामान्य जानकारी देना
- वस्त्र सिलाई के लिए शरीर का माप लेने, लेआउट और पैटर्न बनाने, कपड़े काटने के बारे में सामान्य जानकारी देना
- कपड़ों या कपड़ों के हिस्सों को सटीकता से जोड़ना, मज़बूत और सुंदरता के साथ वस्त्र सिलाई करने के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करना
- ग्राहक के साथ कैसे व्यवहार करें और बिक्री को अधिकतम करने के बारे में जानकारी प्रदान करें।
- व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए विपणन कौशल विकसित करना
- अपनी दुकान के लिए मशीनों की खरीद के बारे में जानकारी प्रदान करना
- सिलाई दुकान के लिए बजट और व्यवसाय योजना बनाने के बारे में जानकारी देना
- अपने पैसे का हिसाब रखने के बारे में जानकारी देना।

प्रशिक्षण की रूपरेखा

सत्र	विस्तृत विषय–वस्तु	समय	तरीका
पहला दिन			
सत्र 1	– प्रतिभागियों का स्वागत – एक–दूसरे को जानना – सात दिन के प्रशिक्षण के बारे में बताना – प्रशिक्षण के उद्देश्य साझा करना	0.5 घंटा	– समझाना – चर्चा
सत्र 2	– सिलाई के लिए आवश्यक उपकरण और अन्य सामग्रीः	1 घंटा	– समझाना – प्रदर्शन
सत्र 3	– टेलरिंग व्यवसाय में उपयोग किए जाने वाले सामान्य शब्द	1 घंटा	– समझाना – चर्चा
सत्र 4	–विभिन्न प्रकार की सिलाई मशीन के बारे में: –सिलाई मशीन के विभिन्न भाग – सिलाई मशीन के उपयोग में ध्यान देने योग्य बातें – सिलाई मशीन के सुरक्षा एवं रखरखाव	2.5 घंटे	–समझाना – प्रदर्शन
दूसरा दिन			
सत्र 5	– क्रॉस लिस्ट को देखना और विश्लेषण करना – सुई और धागे के प्रकार – हाथ से सिलाई करने के लिए सुई – सिलाई मशीन के लिए सुई – सिलाई के लिए उपयोग किए जाने वाले धागों का प्रकार	1 घंटा	– प्रदर्शन – समझान
सत्र 6	– स्टिच के प्रकारः	1 घंटा	– प्रदर्शन – समझाना – अभ्यास
सत्र 7	– थ्रेडिंग की तकनीक – मैन्युअल थ्रेडिंग –एक ऑटो थ्रेडर का इस्तेमाल करना – थ्रेड टेंशन (खिंचाव) – अन्य मामूली समस्याएं, समायोजन और मरम्मती	3 घंटे	– प्रदर्शन – गतिविधि :स्टिचेस् का अभ्यास

तीसरा दिन			
सत्र 8	– क्रॉस लिस्ट को देखना और विश्लेषण करना – ग्राहक के सटीक माप लेने के संबंध में सूचना	1.5 घंटे	– प्रदर्शन – चर्चा – गतिविधि : सटीक माप लेने के अभ्यास
सत्र 9	– फैब्रिक कटिंग के बारे में सिखना : – फैब्रिक पेपर पैटर्न तैयार करना – फैब्रिक का लेआउट एवं कटिंग – क्लिपिंग और नोचिंग कर्व्स	2 घंटे	– प्रदर्शन – समझाना
सत्र 10	– आकार बनाने (शेपिंग) के तकनीक के बारे में सिखनाः – सिलाई टक्स – डार्ट की सिलाईः – प्लीट्	1.5 घंटे	– प्रदर्शन – समझाना – चर्चा
चौथा दिन			
सत्र 11	– क्रॉस लिस्ट को देखना और विश्लेषण करना – वस्त्र में पॉकेट को जोड़ने के तरीके सीखना	1 घंटा	– प्रदर्शन – चर्चा – अभ्यास
सत्र 12	– आस्तीन जोड़ने के बारे में सीखर्ना	1.5 घंटे	– प्रदर्शन – अभ्यास
सत्र 13	– सीम जोड़ने के तकनिक के बारे में सीखना	1.5 घंटे	– प्रदर्शन – अभ्यास
सत्र 14	– पोशाक पर ज़िपर/ज़िप लगाना सीखना	1.घंटा	– प्रदर्शन – अभ्यास
पॉचवा दिन			
सत्र 15	– क्रॉस लिस्ट को देखना और उसका विश्लेषण करना – डिजाइनिंग इनपुटः नई फैशनेबल डिजाइन	1.5 घंटे	– चर्चा – प्रदर्शन – गतिविधिः मैं नए डिजाइन सीखूंगी
सत्र 16	– अपने व्यवसाय का वित्तपोषण	1 घंटा	– प्रदर्शन – गतिविधि : मेरे सिलाई व्यवसाय का वित्तपोषण
सत्र 17	– विक्री एवं व्यवसाय को अधिकतम करने के लिए रणनीतियाँ	2 घंटे	– प्रदर्शन – गतिविधि : विक्री या व्यवसाय को अधिकतम करने के लिए मेरी विपणन रणनीति
सत्र 18	– क्षेत्र के दौरे में जाने की तैयारी करर्ना	0.5 घंटा	– चर्चा – नाटक प्रदर्शन

छठा दिन			
सत्र 19	– दुकानदारों के पास जाना और उनसे बातचीत करना – क्षेत्र के दौरे से मिली सीख का निष्कर्ष निकालना ।	5 घंटे	–जोड़े में फील्ड में जाना –चर्चा –व्यक्तिगत कार्य
सातवां दिन			
सत्र 20	– क्रॉस लिस्ट को देखना और उसका विश्लेषण करना – क्षेत्र के दौरे का अनुभव साझा करना	0.5 घंटा	– समझाना –व्यक्तिगत कार्य – चर्चा – प्रस्तुती
सत्र 21	– बजट बनाना – अपनी सिलाई की दुकान शुरू करने की लागत निर्धारित करना	1.5 घंटे	– समझाना – चर्चा –व्यक्तिगत कार्य – गतिविधि : 'मुझे कौन सी चीजों की आवश्यकता है?' – प्रस्तुती
सत्र 22	– अपनी सिलाई की दुकान के लिए व्यवसाय योजना बनाना'	1.5 घंटे	– समझाना – गतिविधि : 'मेरी व्यवसाय योजना' – चर्चा
सत्र 23	– अपने पैसे का हिसाब–किताब रखना	1 घंटा	– कहानी – चर्चा – गतिविधि : 'मेरे पास ....' – प्रस्तुती
सत्र 24	– समापन सत्रः प्रशिक्षण का समापन	0.5 घंटा	– चर्चा

पहला दिन

सत्र 1:

प्रतिभागियों का स्वागत

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों का स्वागत कर उनका प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण करेंगे

एक–दूसरे को जानना

- प्रतिभागी अपना–अपना नाम बता कर अपना परिचय देंगी
- प्रतिभागी यह बताएंगी कि अपना लघु व्यवसाय चलाने के लिए उन्होंने सिलाई दुकान खोलने का निर्णय क्यों किया
- यदि उनके पास इस काम का पहले से कोई अनुभव या प्रशिक्षण है तो वे उसके बारे में भी बताएंगी
- प्रतिभागी एक–दूसरे के बारे में और अधिक जानने के लिए सवाल–जवाब भी कर सकते हैं

सात दिन के प्रशिक्षण की जानकारी

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों के साथ सात दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम की पूरी जानकारी साझा करेंगे
- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को प्रेरित करेंगे कि यदि उन्हें कार्यक्रम के बारे में कोई और जानकारी चाहिए तो वे उसके बारे में प्रश्न पूछ सकें
- प्रशिक्षक अपने द्वारा पहले से तैयार की गई क्रॉस लिस्ट के बारे में प्रतिभागियों को बताएंगे। इस सूची में उन सारे कौशलों के नाम हैं जो इन सात दिनों के दौरान सीखे जाएंगे और सभी प्रतिभागियों के भी नाम हैं। प्रतिभागियों को प्रत्येक गतिविधि या सत्र के पूरा होने के बाद उस पर क्रॉस (X) का निशान लगाना है। प्रत्येक दिन प्रशिक्षण शुरू करने से पहले इस सूची का विश्लेषण किया जाएगा।

प्रशिक्षण के उद्देश्य साझा करना

- प्रशिक्षण के उद्देश्य प्रतिभागियों के साथ साझा करेंगे

सत्र 2:

सिलाई के लिए आवश्यक उपकरण और अन्य सामग्री

धागे और सुइयों के अलावा ऐसे बहुत सारे उपकरण हैं, जिनके बारे में परिधान बनाने के दौरान आपको जानने की आवश्यकता है। इस खंड में, प्रतिभागी अलग–अलग उपकरण के बारे, एवं उनको सिलाई कार्य में कैसे काम में लेना है, उसके बारे में सीखेंगे।

उपकरण (टूल्स) के प्रकार:

टेलरिंग उपकरणों को अनेक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये निम्नलिखित हैं :

सिलाई और कढ़ाई के उपकरण

हाथ सिलाई के लिए सुई, मशीन सिलाई करने की सुई, सिलाई के लिए धागा (सूती (कॉटन), नायलॉन (रेयान), रेशम (सिल्क), ऊन, मैटेलिक, बोब्बिन या डिजाइनर धागा), एवं पिन, टिंबल्स, बोड्किन, सिलेट्टो आदि उपकरण इसमें सामिल है।

काटने का उपकरण

क. मुड़े हुए हैंडल वाली कैंची का उपयोग बड़े कपड़ों को टेबल पर काटने के लिए किया जाता है, जैसे मार्किंग करने के बाद एक कुर्ता या बेबी सूट काटने के लिए उपयोग किया जाता है। उनका कोणयुक्त ब्लेड और हैंडल एक कोण विशेष पर काटने में सहायक होता है। हमें इनका उपयोग केवल कपड़ों को काटने के अलावा किसी अन्य कार्य के लिए नहीं करना चाहिए।

ख. सामान्य उपयोग की कैंचियां – ये अधिक सामान्य उपयोग में आने वाली कैंचियां होती हैं, जिनका उपयोग पेपर, लेदर, स्निप थ्रेड आदि को काटने के लिए किया जाता है।

ग. सिलाई की कैंचियाँ / दर्जी की कैंची /ट्रिमर – इनका उपयोग कपड़े से धागे और सजावटी सिलाई को काटने के लिए किया जाता है।

क

ख

ग

घ. थ्रेड निपर्स और क्लिपर – यह विशेष प्रकार का कटर है इनका उपयोग पीछे चलने वाले धागे और सीम को काटने के लिए किया जाता है।

ङ. पिंकिंग शियर – ये कैंची एक दांतेदार, खांचदार या आरी के समान ब्लेड फिट होता हैं जो इसे ऊपर–नीचे किनारे को काटने में सहज होता है। इनका उपयोग सीम को काटने के लिए किया जाता है।

च. बटन होल सिजर्स – इनका उपयोग कपड़ों को सटीक लंबाई में काटने के लिए किया जाता है।

घ

ङ

च

मापने के उपकरण

छ. टेप मेजर –यह शरीर की माप लेने के लिए और शरीर और कपड़े के मापों की तुलना करने,

क्लियर रूलर का इस्तेमाल कपड़ा सही माप का काटने के लिए कपड़े पर निशान लगाने, सिविंग गेज, चाक स्कर्ट हेम मार्कर, अंग्रेजी के एल– आकार ('L') का रूलर आदि मापने और चिन्ह लगाने में एवं सटीक चौड़ाई का हेम बनाने के कार्य में उपयोग किया जाता है।

ज. मार्किंग टूल्स – दर्जी का चॉक, ट्रेसिंग व्हील और ट्रेसिंग पेपर

झ. आयरन करने के उपकरण – इलेक्ट्रिक आयरन, आयरन बोर्ड, आयरन पैड

ञ. विविध उपकरण – ऑरेंज स्टिक, कटिंग टेबल, लूप टर्नर (तस्वीर –1 और 2)। यह एक क्लीवर टूल है जो आपको आसानी से कपड़े के सिले हुए ट्यूब को अंदर से बाहर करने में मदद करता है। सीम रिपर (चित्र–3) – यह टांकों को खोलने या बाहर निकालने की आवश्यकता होती है, तो इसके लिए टूल में एक तेज धार वाला हुक होता है जिससे आप आसानी से और बड़े करीने से ऐसा कर सकते हैं। आवोल (चित्र–4) का इस्तेमाल मोटे कपड़े, लेदर और अन्य सामग्रियों पर छोटा गोल छेद करने के लिए, करते हैं।

1
2
3

उपकरणों की देखभाल और सही भंडारण

यहां कुछ सुझाव दिया गये हैं जिसके अनुसार आपको अपने उपकरणों की देखभाल करनी चाहिएः

- अपने कपड़े काटने वाली कैंची का उपयोग किसी भी अन्य सामग्री को काटने के लिए कभी नहीं करें।
- लिंट आदि को हटाने के लिए काटने के बाद कैंची को हमेशा सूखे नरम कपड़े से साफ़ करें।
- आपको कैंची के स्क्रू में तेल डालना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह अटके नहीं।
- वर्ष में एक बार उन्हें पेशेवर व्यक्ति से तेज करवाना चाहिए।
- शुष्क स्थान पर एक बॉक्स में उन्हें भंडारित करें।
- बच्चों की पहुंच से सभी सिलाई उपकरणों को दूर रखें।
- आयरन स्टैंड, पैड़ और क्लॉथ का उपयोग करने के बाद उन्हें मोड़ कर रखें ताकि उन्हें साफ किया जा सके और आसानी से इस्तेमाल में लाया जा सके।
- हमेशा एक पिन कुशन पर या किसी बॉक्स में पिन को रखें।
- हमेशा आसानी से फिर से प्राप्त करने के लिए पेपर के एक टुकड़े पर सुई को रखें।
- हमेशा अपने धागे को रोल करें ताकि वे उलझने से बच सके।
- अपनी पेशेवर आयरन को सावधानीपूर्वक स्टोर करें और प्लेट को साफ रखें।

गतिविधि : उपकरणों का प्रदर्शन

- प्रशिक्षण से पहले प्रशिक्षक सिलाई के लिए आवश्यक उपकरण और सामान के बारे में बात करेंगे।
- प्रशिक्षक प्रशिक्षण के लिए तैयार प्रत्येक उपकरण के महत्वपूर्ण फीचर बताते हुए उसे कब और कैसे इस्तेमाल किया जाता है उसकी जानकारी देंगे।

सत्र 3:

टेलरिंग व्यवसाय में उपयोग किए जाने वाले सामान्य शब्द यहां टेलरिंग व्यवसाय में सबसे सामान्य रूप से उपयोग किए जाने वाले कुछ शब्द का उल्लेख किया गया है।

- **अल्टरेशन** – इसका अर्थ अर्थ कपड़े में आवश्यक परिवर्तन करते हुए इसके उद्देश्य के अनुरूप परिधान का निर्माण करना।
- **बेस्ट** – बेस्टिंग एक प्रकार का ढीला और आसान स्टिच है जिसका उपयोग कपड़े के दो या दो से अधिक टुकड़ों को एक साथ जोड़ने के लिए किया जाता है। इसका इस्तेमाल अस्थायी रूप से सिलाई किए जाने वाले को उचित स्थान पर रखने के लिए किया जाता है।
- **इजींग** – यह अनिवार्य रूप से एक अतिरिक्त कपड़ा है जिसे शरीर के सभी प्रमुख मापों (धड़, कमर और नितंब) के साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आइटम अच्छी तरह से फिट हो।
- **एज स्टिचिंग (किनारों की सिलाई)** – इस प्रकार स्टिच कपड़े के किनारे पर एक पंक्ति के रूप में दिखाई देता है और इसमें मुख्य रूप से कपड़े के रंग के ही धागे का इस्तेमाल किया जाता है।

मण फिंगर प्रेसिंग – इसका वास्तविक मतलब इतना ही है – अपने अंगूठे की मदद से सीम अलाउंस को खोलना!

- **गिव** – यदि किसी कपड़े में 'गिव' होता है, तो इसका मतलब है कि इसमें बहुत अधिक मात्रा में लचीलापन मौजूद है। उदाहरण के लिए, लाइक्रा में डेनिम की तुलना में अधिक गिव मौजूद है। गिव एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग कपड़ा और धागा दोनों ही के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। गिव का विपरीत शब्द स्टेबिलिटी है।
- **ग्रेडिंग** – सटीक सीम अलाउंस का निर्माण करना आवश्यक है; आपको अनावश्यक वजनी कपड़े का निर्माण नहीं करना चाहिए। ग्रेडिंग अलाउंस को काट–छांट (ट्रिमिंग) कर चौड़ा कम करने की एक प्रक्रिया है।
- **हैंड** – कपड़ा के हैंड का मतलब कपड़ा के एहसास और ओढ़ने से है; शाब्दिक रूप से यह स्पर्श करने पर कैसा महसूस होता है।
- **नौच** – नौच का सामान्य अर्थ है सीम को थोड़ा काटना। ऐसा करने से फैब्रिक को कोनों पर आसानी से मोड़ा जा सकता है, और समग्र आकार पर उबड–खाबड़ रेखाओं को हटाया जा सकता है।
- **सीम अलाउंस–** सीम बहुत ही जरूरी है और कोई भी परियोजना शुरू करने से पहले आपको इसके बारे में अवश्य सीखना चाहिए। एक सीम अलाउंस का मतलब कपड़े की स्टिचिंग और किनारे के बीच स्थान से है। कुछ आइटम के लिए अन्य आइटम की तुलना में अधिक सीम अलाउंस की आवश्यकता होती है, इसलिए आपको उनकी सटीक माप लेनी चाहिए!
- **सेल्विज** – सेल्विज (गोंट) मुख्य रूप से उस कच्चे कपड़ा का किनारा होता है, जिसे आप दुकान से खरीदते हैं। इसी स्थान पर कंपनी और कपड़ा का विवरण लिखा होता है।

- **टॉप स्टिच** – यह स्टिच की एक पंक्ति है, जो स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
- **गैदरिंग** – यह कपड़े के एक टुकड़े की लंबाई को छोटा करने की तकनीक है ताकि एक लंबे टुकड़े को छोटे टुकड़े के साथ जोड़ा जा सके। इसका उपयोग फुल स्लीव (बाजु) को कमीज के आर्मसिस या कफ से जोड़ने, या एक स्कर्ट को बोडिस से जोड़ने के लिए किया जाता है। एकत्र होने वाली असंख्य पंक्तियों को शिर्रिंग कहते हैं।
- **इंटरफेसिंग** – यह एक सामान्य टर्म है, जिनका उपयोग विभिन्न प्रकार के सामग्रियों के लिए किया जाता है। यह सिलाई किये जानेवाले कपड़े के अनदेखे या 'विपरीत या उलटा' दिशा वाले क्षेत्र है।
- **लाइनिंग (अस्तर)** – यह फैब्रिक, फर, या अन्य सामग्रियों की एक आंतरिक परत है, जो पूर्ण समाप्ति प्रदान करता है, सीम अलाउंस, इंटरफेसिंग, और कंस्ट्रक्शन डिटेल्स को छिपाने में मदद करता है; और यह एक परिधान को आसानी से पहनने ओर उतारने में मदद् करता है।
- **पैचवर्क** – यह नीडल–वर्क या क्राफ्ट का एक रूप है जिसमें परिधान या कपड़े के छोटे टुकड़ों को एकत्र करना, उनकी सिलाई करना और एक बडे डिजाईन में उनकी स्टिचिंग करना शामिल है।
- **पैटर्न** – सिलाई और फैशन डिजाईन में, पैटर्न मूल वस्त्र का एक रूप है, जिसमें से एक समान प्रकार के वस्त्र की कॉपी की जाती है। यह एक पेपर या कार्डबोर्ड का टेम्पलेट है जिसे, कपड़ा को काटने और जोड़ने से पहले, कपड़े के ऊपर रखकर परिधान के सारे हिस्सों का पता लगाया जाता है।
- **पाइपिंग** – यह एक प्रकार का तराशना (ट्रिम) या सुन्दरता प्रदान करना है जिसमें एक कपड़ा या अन्य बस्तु के किनारों या स्टाइल लाइन्स को निश्चित करने के लिए मुड़े हुए फैब्रिक के स्ट्रिप को एक सीम में प्रविष्ट कराया जाता है।
- **प्लाकेट** – यह ट्राउजर या स्कर्ट के उपरी भाग में या फिर परिधान के नेक या स्लीव में एक ओपनिंग है, जो परिधान को आसानी से पहनने या उतारने में मदद् करता है।
- **स्टोमाचेर** – इसे प्लाकार्ड भी कहा जाता है। यह एक चीर या काट होता है जो लटकते हुए पॉकेट, या एक पेटीकोट या स्कर्ट के पॉकेट तक पहुँचने में मदद् करता है।
- **प्लीट या प्लेट** – यह एक प्रकार का फोल्ड है जिसका निर्माण कपड़े के अपने ही पिछले हिस्से पर दो बार मोड़ते हुए और इसे एक स्थान पर सुरक्षित सिलाई करते हुए किया जाता है। इसका उपयोग सामान्य रूप से एक संकीर्ण परिधि के परिधान भाग में एक चौड़े टुकड़े के परिधान को एकत्र करने के लिए क्लोथिंग और अप्होल्स्टरी (कपड़े और असबाब) में किया जाता है।
- **पॉकेट** – यह थैली/ लिफ़ाफ़ा के समान होता है जिसे या तो क्लोथिंग के एक आर्टिकल में बांधा या प्रविष्ट कराया जाता है, ताकि इसमें छोटे–छोटे वस्तुओं को रखा जा सके।

गतिविधि :

- प्रशिक्षक प्रतिभागिओं के साथ ऊपर दिए गए पंक्तियों में से सामान्य टेलरिंग शब्दों/परिभाषाओं को पढेंगे। प्रशिक्षक प्रतिभागिओं को ऊपर दिए गए सामान्य टेलरिंग शब्दों/परिभाषाओं में से कुछ शब्दों को समझाएंगे आवशययक होने पर कुछ उदाहरणों को प्रस्तुत करेंगे।
- प्रशिक्षक प्रतिभागिओं को वोलेंगे कि, वे कार्यस्थल पर इन सामान्य टेलरिंग परिभाषाओं को व्यवहार में लेने का अभ्यास करें।

सत्र 4 :

विभिन्न प्रकार की सिलाई मशीन के बारे में:

बाजार में अलग–अलग प्रकार की अनेक सिलाई मशीनें उपलब्ध हैं, जिसमें कुछ विशेष सिलाई करने वाली सामान्य डिजाइनों वाली मशीनों से लेकर कम्प्यूटरीकृत मॉडल तक शामिल हैं, जो चित्र या तस्वीर को देखकर स्वतरू ही विस्तृत कढ़ाई के डिजाइन सिलाई कर सकती हैं। सिलाई मशीन का प्राथमिक कार्य हमेशा ही टांके बनाना होता हैं, चाहे वह कपड़े को सजाने के लिए हो या एक परिधान या सहायक–परिधान का निर्माण करने के लिए अनेक टुकड़ों को जोड़ना हो। जिस तरह से सिलाई मशीन इस कार्य को पूरा करती है, उसके आधार पर उसका वर्गीकरण किया गया है।
ज्यादातर, सिलाई मशीनों को उनके नियंत्रण प्रणाली, बेड़, एवं स्टिच के आधार पर अलग–अलग प्रकार में भाग किया जाता है।

नियंत्रण प्रणाली के आधार पर : मैन्युअल रूप से नियंत्रित मशीनें, सेमी–आटोमेटिक (अर्ध–स्वचालित) मशीनें, आटोमेटिक (स्वचालित) मशीन एवं रोबोटिक मशीन।

स्टिच के आधार पर : लॉक स्टिच, (सिंगल नीडल लॉक स्टिच, डबल नीडल लॉक स्टिच, ओवरलॉक स्टिच, फ्लैट–लॉक स्टिच), चेन स्टिच, ओवरलॉक स्टिच, फीड ऑफ दि आर्म, बटन अटैचिंग, बटन होल, बारटैक, जिगजैग।

बेड़ के आधार पर: फ्लैट–बेड सिलाई मशीन, लॉन्ग–आर्म सिलाई मशीन, सिलेंडर–बेड सिलाई मशीन, पोस्ट–बेड सिलाई मशीन, फीड–ऑफ–दि–आर्म सिलाई मशीन।

सिलाई मशीन के विभिन्न भाग

आपके पास विभिन्न प्रकार की सिलाई मशीन रखे होंगे या रखने की योजना हो सकती है, लेकिन अधिकांश सामान्य फंक्शन विभिन्न प्रकारों और मॉडलों की मशीनों के लिए समान होती हैं। अपनी सिलाई मशीन के प्रत्येक भाग के उपयुक्त कार्य को जानने के लिए नियमित रूप से अपने मशीन के मैनुअल की जाँच करना सही रहता है। सिलाई मशीन के विभिन्न भागों के बारे में कुछ सामान्य विवरण इस प्रकार हैं:

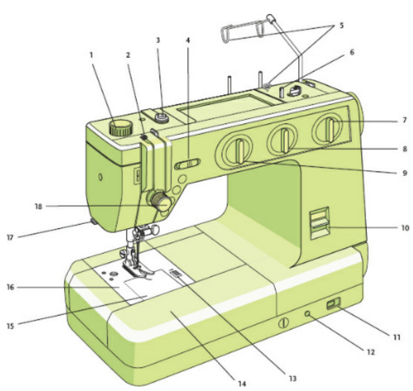

1. फूट प्रेशर डायल: इसका उपयोग हल्के, भारी या वजनी परतदार फैब्रिक की सिलाई करते समय फूट प्रेशर को समायोजित करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है; हालांकि, औसत सिलाई परियोजनाओं के लिए आटोमेटिक फूट प्रेशर युक्त मशीन अधिक उपयुक्त होगी।

2. थ्रेड टेक–अप लीवरः यह नीडल के साथ ऊपर–नीचे करती है और सिलाई के लिए आवश्यक धागे की मात्रा को नियंत्रित करती है।

3. टेंशन डिस्क के साथ बोब्बिन थ्रेड गाइड : यह थ्रेड को स्पूल से बोब्बिन विन्डिंग स्पिंडल तक ले जाने का कार्य करती है। इस गाइड में एक टेंशन डिस्क होता है ताकि थ्रेड को कसकर बांधा जा सके।

4. स्पीड कंट्रोलः यह अधिक समतल सिलाई के लिए आपको अधिकतम स्टिचिंग स्पीड को सीमित करने में मदद करता है।

5. थ्रेड गाइडः थ्रेडिंग रन के साथ ऐसा कई होता है, जो थ्रेड को सही दिशा में ले जाने में मदद करता है।

6. बोब्बिन विंडर स्पिंडलः इसका उपयोग बोब्बिन को थ्रेड से भरने के लिए किया जाता है।

7. स्टिच विड्थ डायलः जब आप ज़िगज़ैग या अन्य प्रकार की सजावटी सिलाई करते हैं, यह नीडल के साथ–साथ घूमकर दूरी को नियंत्रित करता है।

8. स्टिच लेंग्थ डायलः इसका उपयोग आपकी सिलाई की लंबाई को नियंत्रित करने के लिए किया जाता हैः जिस मशीन में लंबी सिलाई की व्यवस्था है. वो लंबी अवधि तक कार्य करने मे सक्षम रहती है।

9. स्टिच सेक्टर डायलः इसका इस्तेमाल मशीन के बिल्ट–इन स्टिच को सिलेक्ट करने के लिए किया जाता है।

10. रिवर्स स्टिच लीवरः यह आपको उल्टी दिशा में सिलाई करने में मदद करता है। कुछ मॉडल में रिवर्स स्टिच का चयन स्टिच लेंथ डायल (8) को माइनस नंबर पर घुमाते हुए किया जाता है।

11. ड्राप फीड लीवरः यह नीडल प्लेट के नीचे फीड डॉग को नीचे करता है ताकि फ्री–मोशन में सिलाई हो सके। वैकल्पिक रूप से, फीड डॉग के ऊपर एक प्लेट को अस्थायी रूप से फिट करने से यह संभव हो सकता है।

12. नी लिफ्टर सॉकेट जहां नी लिफ्टर (यदि उपलब्ध कराया जाता है) को प्लग–इन किया जाता है।

13. हुक कवर रिलीज़ बटनः यह बोब्बिन तक पहुंचने के लिए हुक कवर प्लेट को मुक्त करता है (केवल टॉप लोडिंग मशीन के लिए)।

14. फ्लैट बेडः यह एक विशाल सपाट सिलाई करने वाला क्षेत्र है। इसके कुछ मशीन में, इसके पार्ट्स को खोलकरं, इसके फ्री आर्म तक पहुंचा जा सकता है।

15. हुक कवर प्लेटः यह बोब्बिन को अपने केसिंग में कवर करता है (यह केवल टॉप लोडिंग मशीन में पाया जाता है)।

16. नीडल प्लेटः इसे कॉमन सीम अलाउंस के रूप में सटीक सिलाई करने के लिए चिन्हित किया जाता है। बोब्बिन केसिंग, फीड डॉग और हुक रेस को साफ करने के लिए छोटे–छोटे स्क्रू को खोलकर इसे निकाला जा सकता है।

17. थ्रेड कटरः इसका उपयोग नीडल के थ्रेड को काटने के लिए किया जाता है।

18. टेंशन डायलः इसका इस्तेमाल एक पूर्ण रूप से एवं सटीक सिलाई के लिए नीडल के टेंशन (खिंचाव) को समायोजित करने के लिए किया जाता है।

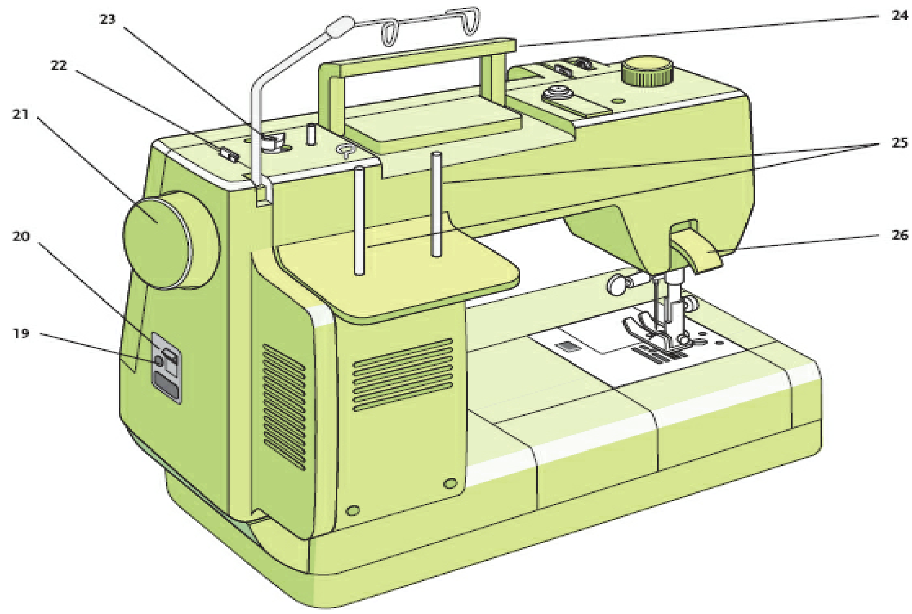

19. फूट कंट्रोल सॉकेटः यह यहां फूट पेडल के लिए प्लग को जोड़ता है जो स्टिचिंग स्पीड को नियंत्रित करता है।

20. पॉवर स्विचः यह पॉवर को चालू करता है और मशीन के बिल्ट–इन सेविंग लाइट को ऑन या ऑफ भी करता है।

21. हैंड व्हीलः यह नीडल को ऊपर–नीचे घूमता है। हमेशा हैंडव्हील को घड़ी की उलटी दिशा में घुमाएं।

22. थ्रेड कटरः इसका इस्तेमाल बोब्बिन थ्रेड को काटने के लिए किया जाता है, जब बोब्बिन पूर्ण रूप से भर जाता है।

23. बोब्बिन विंडर स्टॉपरः इसे विन्डिंग (घुमाव) शुरू होने पर बोब्बिन को धक्का दिया जाता है। जब बोब्बिन भर जाता है, तो यह वापस निकल जाता है और बोब्बिन विन्डिंग मैकेनिज्म को रोक देता है।

24. कैरिंग हैंडलः यह मशीन को हमेशा पकड़ कर रखता है।

25. थ्रेड स्पूल पिन्सः ये सभी नीडल के लिए धागे को पकड़ कर रखता है और इसे वर्टिकली (खड़ा) या हॉरिजॉन्टली (क्षतिज) सेट किया जा सकता है।

26. प्रेशर फूट लिफ्टिंग लीवरः फैब्रिक को नीचे की ओर फिसलाने के लिए, या फिर प्रेशर फूट को बदलते समय, इसे लिफ्ट करें।

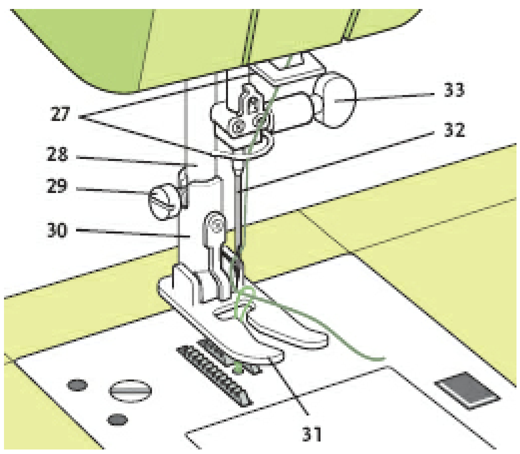

27. थ्रेड गाइडः यह नीडल थ्रेड को नीडल के आंख की ओर ले जाता है।

28. प्रेशर बारः फूट होल्डर इसके चारों ओर जकड़ता है, जिसे थंबस्क्रू द्वारा उसके स्थान पर बनाए रखा जाता है।

29. प्रेशर फूट थंबस्क्रूः यह संपूर्ण प्रेशर फूट होल्डर को मुक्त करता है।

30. प्रेशर फूट होल्डरः यह प्रेशर बार को जकड़ता है : कुछ मशीन पर फूट और फूट होल्डर सारे एक ही इकाई होता है।

31. प्रेशर फूटः यह नीडल प्लेट और फीड डॉग के विरूद्ध फैब्रिक को पकड़े रहता है ताकि उचित प्रकार से सिलाई हो सके।

32. नीडलः नीडल उपरी थ्रेड को निचले थ्रेड से मिलाने के लिए नीचे की ओर लेकर जाता है ताकि यह फैब्रिक में प्रविष्ट होने के लिए पर्याप्त रूप से भारी हो सके, परंतु इसे इतना भी बड़ा नहीं होना चाहिए कि फैब्रिक में एक भद्दा छेद हो जाए। एक घिसा हुआ, सुस्त और क्षतिग्रस्त नीडल सिलाई में समस्याएं उत्पन्न कर सकता है, जैसे छुटे हुए सिलाई या सिकुड़ा हुआ सीम।

33. नीडल क्लैंप स्क्रूः इसे नीडल को निकालने के लिए ढीला किया जाता है; उचित स्थिति में नीडल को सुरक्षित करने के लिए कसा जाता है।

सिलाई मशीन के उपयोग में ध्यान देने योग्य बातें

सिलाई मशीन का उपयोग करते समय ध्यान देने योग्य सुरक्षा नियम

सुरक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है और यह आपकी जिम्मेदारी है, कि आप स्वयं को जोखिमों से दूर रखें। सिलाई मशीन के उपयोग के दौरान निम्नलिखित जोखिम उत्पन्न हो सकता हैः

- नुकीले, धारदार किनारों, चाकू के ब्लेड, कैंची और पिन से कटने और चोट लगने का जोखिम
- सिलाई करते समय अंगुलियों में चोट लगना
- सूई के टूटने से आंखों में जख्म होना
- ख़राब प्रकाश के कारण आंखों पर जोर पड़ना
- ख़राब तरीके से बैठने के कारण पीठ में दर्द होना

सिलाई मशीन पर कार्य करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- हमेशा सिलाई का कोई भी कार्य शुरू करने से पहले सभी समायोजनों और सेटिंग्स की सावधानी से जांच करें।
- मशीन पर सिलाई करते समय, लो–शूज और टाइट–फिटिंग वाला परिधान पहनें। सिलाई मशीन परिचालित करते समय ढीले फिटिंग वाले स्लीव, स्वेटर्स, आभूषण टाई, और रिबन नहीं पहनें। यदि आपके बाल लंबे हैं, तो इन्हें पीछे की ओर बांधकर रखें जैसे चोटी बनाकर आदि।
- थकान को कम करने के लिए हमेशा उचित शारीरिक स्थिति में कार्य करें, दुर्घटनाओं से बचने का प्रयास करें और अपनी कार्यकुशलता को बढ़ाएं। यदि संभव हो तो, कुर्सी की उंचाई को समायोजित

करें ताकि आपका पैर फर्श पर टिका रह सके।

- मशीन को परिचालित करते समय अपनी कुर्सी को आगे की ओर या मशीन की ओर मत खींचे।
- अपने सिर को हमेशा टेबल से ऊपर रखें।
- अपने पैर को पेडल से अलग रखें जब आप बैठे होते हैं या सुई में धागा लगा रहे होते हैं।
- जब कोई दूसरा व्यक्ति सिलाई मशीन को परिचालित कर रहा हो, तो स्पर्श न करें।
- सिलाई मशीन को कभी भी बहुत अधिक तेज गति से परिचालित नहीं करें।

सिलाई मशीन के सुरक्षा एवं रखरखाव

केवल कुछ ही घंटों की सिलाई से नीडल प्लेट के अंदर फुज्ज़ और लिंट जमा हो जाएगा। कभी–कभी उसके अंदर धागे का टुकड़ा भी नष्ट हो सकता है। सिलाई मशीन में अधिकांश समस्याएं अक्सर उसके ख़राब रखरखाव या बिल्कुल रखरखाव नहीं किए जाने के कारण उत्पन्न होती हैं। यहां मशीन के रखरखाव के लिए कुछ सुझाव दिया गया है जो आपको लंबी अवधि तक मशीन को बिना किसी परेशानी के संचालित करने में मदद कर सकता है।

- तेल डालना (ऑइलिंग): सिलाई मशीन को उचित प्रकार से तेल–युक्त रखें।
- सफाई: मशीन को यथासंभव लिंट से मुक्त रखना अत्यंत आवश्यक है।
- चमकाना (शाइनिंग): मशीन की सतह को एक साफ़, मुलायम, गीले कपड़े से पोंछें। अपनी मशीन की छड़ी पर अपघर्षक का इस्तेमाल नहीं करें और इस पर टेप का टुकड़ा नहीं रखें।
- भंडारण: सिलाई मशीन को अधिक समय बाहार नहीं रखना चाहिए। मशीन को ऐसे कमरे में भंडारित नहीं करें, जो ठंडा, गर्म या नम है। उपयोग नहीं करने की दशा में मशीन को ढंक कर रखें, ताकि यह धूल–गर्द से सुरक्षित रह सके।

कुछ ख़राब आदतें जो एक सिलाई मशीन को बर्बाद कर देती हैं और इसकी कार्यक्षमता को कम कर देती हैं:

कभी–कभी सिलाई मशीन में कोई तकनीकी गड़बड़ी नहीं होती है, जिसके कारण सिलाई मशीन पर कार्य करना कठिन हो जाता है। इसके बजाय, यह आपकी आदतें होती हैं, जो सामान्य सिलाई का उपयोग करने के दौरान कार्यों को अधिक समस्याग्रस्त बना देती हैं।

यहां कुछ कार्यों का उल्लेख किया गया है, जिससे आपको बचना चाहिए:

- सिलाई किए जाने वाले कपड़े के अनुसार उचित सुई का इस्तेमाल नहीं करना
- निम्न गुणवत्ता वाले धागे का इस्तेमाल करना या अनुचित मोटाई वाले धागे का इस्तेमाल करना, जो उस कपड़े के अनुसार नहीं होता है जिस पर आप कार्य कर रहे होते हैं।
- टेंशन डिस्क को अत्यधिक ढीला या अत्यधिक टाइट सेट करना।
- महीनों से मशीन की सफाई और ल्युब्रिकेटिंग नहीं करना।

- बहुत ही मोटे और कठिन कपड़े की सिलाई करना जो आंतरिक भागों पर अतिरिक्त दबाव डाल सकती है।
- अपनी मशीन को ढंक कर नहीं रखना, या उसे बाहर या धूल–गर्द वाले माहौल में रखना।

आपको सुनिश्चित करना चाहिए कि आप मशीन का उपयोग एक कीमती संपति के रूप में करें न कि एक सामान्य वस्तु के रूप में।

गतिविधि :

- ट्रेनर सिलाई मशीनों के विभिन्न हिस्सों और इसकी देखभाल करने के तरीके के बारे में प्रदर्शित करते हुए समझाएंगे।
- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को आज के प्रशिक्षण सत्रों में अपनी विचार रखने के लिए कहेंगे।

दूसरा दिन

सत्र 5:

क्रॉस लिस्ट को देखना और उसका विश्लेषण करना

- प्रत्येक प्रतिभागी क्रॉस लिस्ट को देखेंगे और प्रशिक्षण की प्रगति के बारे में चर्चा करेंगे।

सुई और धागे के प्रकार

हाथ से सिलाई करने के लिए सुई –

हाथ से सिलाई करने की सुई विभिन्न पॉइंट और आकार में उपलब्ध है। आपके हाथ से सिलाई के दौरान ये सुई धागे को कपड़े से होकर आगे बढ़ने में मदद करती हैं।

हाथ से सिलाई करने वाली सुई महंगी नहीं होती है। मोटी और भारी सुईयों का उपयोग मोटे और भारी कपड़ों की सिलाई के लिए किया जाता है। कपड़ा जितना अधिक महीन होगा, आपको उतनी ही महीन (पतली) सुई का उपयोग करना चाहिए। विशेष प्रकार की सुईयों का शायद ही कभी उपयोग किया जाता है। सर्किल की सिलाई के लिए एक वक्राकार सुई का उपयोग नहीं किया जाता है। इसका सामान्य उपयोग अप्होल्स्टरी की हाथ से सिलाई के लिए किया जाता है, जब एक सीधी सुई पर्याप्त रूप से कार्य नहीं करती है।

हाथ से सिलाई में उपयोग किए जाने वाली सबसे सामान्य प्रकार की सुई को शार्प्स कहते हैं। शार्प्स की लंबाई मध्यम होती है (उपलब्ध अन्य सभी सुईयों की तुलना में), और इसमें धागा डालने के लिए गोलाकार छिद्र होता है।

सिलाई मशीन के सुई –

वास्तव में साधारण दिखाई देने के बावजूद, एक सुई सिलाई मशीन का एक जटिल हिस्सा है और विभिन्न प्रकार के सुई के अनुसार बदलता रहता है और आपको सिलाई का उपयुक्त अनुभव प्रदान करता है। यहां सुई के विभिन्न भागों का वर्णन किया गया हैः

1. शैंक – यह सुई का ऊपरी भाग है जो मशीन में प्रविष्ट रहता है; अक्सर इसका अगला हिस्सा गोलाकार होता है और पिछला हिस्सा सपाट होता है, जो सुई को उचित स्थिति में फिट करता है।

2. शाफ़्ट – यह शैंक की नीचे वाली बॉडी है। शाफ़्ट की मोटाई सुई के आकार का निर्धारण करती है।

3. फ्रंट ग्रूव – यह सुई की आंख के ऊपर छिद्र होता है, जिसे पर्याप्त रूप से बड़ा होना चाहिए ताकि स्मूथ सिलाई के लिए इससे होकर "क्रेडल" थ्रेड आसानी से गुजर सके।

4. पॉइंट – यह सुई का नुकीला सिरा है जो फैब्रिक में प्रवेश करता है और धागे को बोब्बिन–हुक से गुजारते हुए सिलाई का निर्माण करता है। सुई के प्रकार के अनुसार पॉइंट का आकार भी अलग–अलग होता है।

5. स्कार्फ – सुई के पीछे का निशान। एक लंबा निशान (स्कार्फ) बोब्बिन हुक को धागे का फंदा आसानी से बनाने में मदद करते हुए छूटने वाली सिलाई की संभावना को समाप्त करने में मदद करता है। एक छोटे स्कार्फ के लिए पूरी तरह से समयबद्ध मशीन की आवश्यकता होती है।

6. आई (आंख) – सुई के निचले भाग में एक छिद्र जिससे होकर धागा गुजरता है। सुई का आकार और प्रकार आई (आंख) के आकार और प्रकार का निर्धारण करता है।

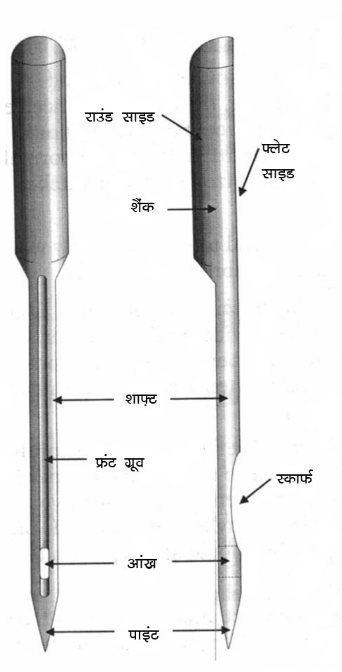

सुई की पहचान करना और नीडल की संख्या पद्धति को समझनाः

सुई को उसका आकार और वजन के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। निम्न तालिका में दो सबसे सामान्य रूप से उपयोग की जाने वाली संख्या पद्धति का उल्लेख किया गया है। सुई की (नम्बर) संख्या जितनी अधिक होगी, सुई उतनी ही मोटी और भारी होगी।

यहां कुछ मानक नम्बर और उनके आकार का विवरण तथा वे किस प्रकार के कपड़ा के लिए अधिक उपयुक्त हैं, उसका उल्लेख किया गया है।

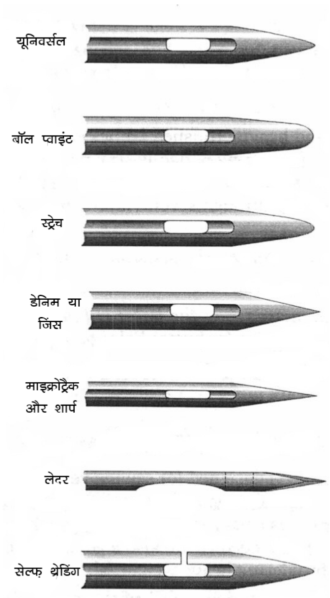

1. यूनिवर्सल नीडल – जैसा कि नाम से पता चलता है कि यह लगभग सभी प्रकार के कपड़ों के लिए सबसे सुरक्षित सुई है। यह 60/8 से 120/19 तक के आकार की एक विस्तृत श्रृंखला में उपलब्ध है। इसके पास थोड़ा सा गोल टिप और बहुत लंबा स्कार्फ है जो कपड़े को आसानी से यात्रा करने की अनुमति देता है। उसका उपयोग सिंथेटिक्स, कॉटनस या ऊनी वस्त्रों के लिए किया जा सकता है।

2. बॉल–प्वाइंट और स्ट्रेच नीडल– यह सुई एक अधिक गोल टिप और भारी कॉटन और निट्स पर सर्वश्रेष्ठ तरीके से कार्य करती है। चूंकि यह कपड़े छेदने के बजाय तंतुओं के माध्यम से गुजरते हुए काम करती है, इसलिए इसे लाइक्रा या स्पैन्डेक्स जैसी सामग्री के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सुई 70 ⁄ 10 से 100 ⁄ 16 तक के आकारों में उपलब्ध है।

3. माइक्रोट्रैक और शार्प नीडल – जैसा कि नाम से पता चलता है कि इस प्रकार की सुई कपड़े में छिद्र करते हुए कार्य करती है। यही कारण है कि उसका किनारा तेज धार वाला होता है। जब सटीक सिलाई की आवश्यकता होती है तब उसका उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए किनारों और पिन से टांकने के लिए और रेशम, हेआरलुम नाजुक कपड़े, सिंथेटिक लेदर या पतले बुने हुए कपड़े पर इस्तेमाल किया जाता है। यह कपड़े को उधड़ने नहीं देंती है। यह 60 ⁄ 8 से लेकर 9 ⁄ 14 तक के आकारों में उपलब्ध है (जिसका अर्थ है कि यह कभी भी बहुत अधिक मोटी या भारी नहीं होती है।)।

4. लेदर नीडल – जैसा कि नाम से पता चलता है कि इसका इस्तेमाल प्राकृतिक लेदर की सिलाई के लिए किया जाता है (इसका उपयोग सिंथेटिक लेदर की सिलाई के लिए नहीं किया जाता है)। इसका सिर एक तीर के समान होता है और यह लेदर को काटते हुए काम करती है। इसका इस्त्तेमाल बहुत भारी फॉक्स लेदर और भारी गैर बुने हुए वस्त्रों के लिए भी किया जा सकता है। चूंकि यह एक स्थायी काट छोड़ती है इसलिए इसे बहुत सावधानी और सटीकता के साथ चलाया जाना चाहिए और ऊन या रेशम पर इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। वे कपड़े उधड़ जाएंगे। यह 80 ⁄ 12 से 110 ⁄ 18 तक के आकारों में उपलब्ध है।

5. डेनिम या जिंस नीडल – इसका इस्तेमाल डेनिम और कैनवास जैसे बहुत भारी कपड़े के लिए किया जाता है। इस सुई को वजनी होना चाहिए ताकि ये कपड़े के माध्यम से आसानी से प्रवेश कर सके, इसलिए इसे वजन देने के लिए इसमें बहुत तेज़ टिप और भारी मोटा स्कार्फ होता है। इसकी आंखें बड़ी होती हैं, जिससे इसमें मोटे धागे का इस्तेमाल आसानी से किया जा सकता है। यह 80 ⁄ 12–110 ⁄ 18 आकार में उपलब्ध है, इस प्रकार आप देख सकते हैं कि वे कभी भी बहुत अच्छे नहीं होते हैं।

6. मेटलिक नीडल – आप इसका प्रयोग अक्सर नहीं कर सकते हैं, लेकिन यह धातुवत (मेटालिक) धागे के लिए इस्तेमाल अत्यधिक विशेष प्रकार की सुई है। मेटालिक धागे के माध्यम से होकर गुजरने के लिए इसकी आंखें बहुत बड़ी होती हैं और आमतौर पर केवल एक आकार 80 ⁄ 12 में ही उपलब्ध है।

7. सेल्फ़ थ्रेडिंग नीडल – जैसा कि नाम से पता चलता है कि उसका निर्माण आसान थ्रेडिंग में मदद करने के लिए किया जाता है। उसके पास एक तरफ एक खांचा होता है जिससे फिसल कर ध ागा सुई के आंखों में चला जाता है। इसका आकार 80 ⁄ 12 से 90 ⁄ 14 तक होता है और यह एक सामान्य उपयोग की सुई से कहीं अधिक है।

8. मशीन एम्ब्रॉइडरी नीडल – इस प्रकार के सुई में आंख और स्कार्फ बड़ा होता है, जो धागा को कटा हुआ या तोड़ने से रोकता है। जब आप कढ़ाई धागे या सिंथेटिक थ्रेड्स का उपयोग कर रहे हैं तब इसका सबसे अच्छा उपयोग किया जाता है। ये 70 ⁄ 10 से 90 ⁄ 14 तक आकारों में उपलब्ध है।

सिलाई के लिए उपयोग किए जाने वाले धागों का प्रकार

आज बाजार में विभिन्न प्रकार के धागे उपलब्ध हैं, जिनमें सफेद रंग के साधारण सूती धागा से लेकर डिजाइनर धागा तक शामिल है, जिसका निर्माण कपास और पॉलिस्टर के संयोजन से किया जाता है और वे विविध रंगों में उपलब्ध हैं। यहां हाथों की सिलाई और उनके संबंधित अनुप्रयोग के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले धागे के प्रकार का उल्लेख किया गया है। धागे के कुछ उदाहरण हैंः

सूती धागा– यह मुख्य रूप से सिलाई सामग्री की आपूर्ति करने वाली दुकानों में पाया जाता है और अधिकांश सामान्य प्रकार की सिलाईयों जैसे सीम, हेम्स के उपयुक्त है। हालांकि सूती धागे का इस्तेमाल ऐसे कपड़ों के लिए नहीं किया जा सकता है, जिसमें फैलने और सिकुड़ने की बहुत क्षमता होती है क्योंकि अधिक फ़ैलाने से वह टूट सकता है। सूती धागा भी विभिन्न किस्मों में उपलब्ध है, जैसे आल–पर्पस कॉटन, स्टैण्डर्ड कॉटन, कॉटन परले, कॉटन ए बॉर्डर, फ्लावर थ्रेड, क्विल्टिंग थ्रेड, आदि।

पॉलिस्टर धागा – इस प्रकार का धागा हाथ और सिलाई मशीन दोनों प्रकार की परियोजनाओं के लिए उपयुक्त है, जहां कपड़े के अधिक फैलने और सिकुड़ने की संभावना होती है। यह धागा फैलने वाले कपड़ों के लिए उपयुक्त है, साथ ही यह बुनाई वाले सिंथेटिक, क्निट्स और फैलने वाले वस्त्रों के लिए भी अच्छा है। इस धागे का रूप मोम के समान या चमकदार होगा, सूती धागे के समान चमकरहित नहीं। पॉलिस्टर का धागा विभिन्न प्रकार का होता हैः आल पर्पस थ्रेड और इनविजिबल थ्रेड।

हैवी ड्यूटी – हैवी ड्यूटी तहेद हैवी ड्यूटी फैब्रिक के लिए उपयुक्त होता है, जिसका इस्तेमाल मुलायम फ़र्निशिंग जैसे अप्होल्स्टरी और विंडो के ड्रेसिंग, विनायल, और कोट फैब्रिक्स के लिए किया जाता है। यह लगभग 40 साईज का होता है। इसका निर्माण पॉलिएस्टर, कॉटन से लिपटे हुए पॉलिएस्टर, या कॉटन से किया जाता है।

रेयान थ्रेड्स – रेयान कशीदाकारी का धागा सपाट सिलाई करने के लिए अच्छी तरह से काम करता है जहां कपास की कढ़ाई का धागा बहुत ऊंचा हो सकता है।

नायलॉन थ्रेड्स – यह एक मजबूत धागा है, जो हल्के से मध्यम वजन वाले सिंथेटिक वस्त्रों के लिए उपयुक्त है। यह एक बेहतर धागा है जो कपड़े को नुकसान पहुंचाये बिना उससे होकर आसानी से जा सकता है।

सिल्क थ्रेड – सिल्क का धागा हाथ से सिलाई के लिए सर्वोत्कृष्ट धागा है, क्योंकि यह मजबूत, लचीला होता है और कपड़े से होकर गुजरते हुए उसे कम से कम नुकसान पहुंचाता है। यह सिल्क और ऊनी वस्त्रों की सिलाई के लिए आदर्श है, और सभी प्रकार के कपड़ों की आंतरिक सिलाई के लिए उपयुक्त है। विभिन्न प्रकार का सिल्क थ्रेड उपलब्ध है, जैसेः सिल्क फ्लॉस, ट्विस्टेड सिल्क, स्ट्रैंडेड सिल्क, सिल्क रिबन आदि।

वूल थ्रेड – वूल थ्रेड का इस्तेमाल कशीदाकारी परियोजनाओं और ब्लैंकेट स्टिच का इस्तेमाल कर कंबल का सीम बनाने के लिए किया जाता है। वूल थ्रेड्स भारी कपड़ों, जैसे उन, या कैनवास आदि के साथ इस्तेमाल करने के लिए सर्वश्रेष्ठ है। वूल थ्रेड्स विभिन्न प्रकार का होता है, जिसमें पर्शियन वूल, टेपेस्ट्री वूल और क्रेवेल वूल शामिल है।

गतिविधि :

- प्रशिक्षक विभिन्न प्रकार की सुइयों और धागों के बारे में प्रदर्शित करते हुए समझाएंगे।

सत्र 6:

स्टिच के प्रकार:

इस खंड में प्रतिभागी सबसे सामान्य रूप से उपयोग किए जाने वाले टेलरिंग स्टिच और डेकोरेटिव (सजावटी) स्टिच के बारे में सीखेंगे।

सिलाई (स्टिचिंग) के लिए कपड़ों को तैयार करते समय, इसकी वास्तव में सिलाई करते समय, विशेष फीचर्स जैसे लेसेज, ट्रिम और बटन होल आदि बनाते समय तथा वस्त्र को अंतिम रूप देते हुए, विशेष रूप से सीम, किनारे, आदि की सिलाई के दौरान, आप जिन सबसे सामान्य स्टिच का उपयोग करेंगे, उनके कुछ उदाहरण यहां दिये गये हैं। मैन्युअल सिलाई के मशीन का उपयोग करने पर विभिन्न प्रकार के स्टिच के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है परंतु अधिकांश आधुनिक मशीनें पहले से फिट स्टिच स्टाइल से लैस होती हैं, जिसे नियंत्रित करने और बनाने में कंप्यूटर मदद करता है।

प्रत्येक श्रेणी की सिलाई मशीन एक विशेष प्रकार की स्टिच प्रदान करती है, जो कि सुईयों की संख्या, लॉपर्स तथा धागों पर निर्भर करती है, जो संयुक्त रूप से स्टिच का निर्माण करती है। इन प्रत्येक विन्यास को स्टिच प्रकार कहा जाता है, तथा उन्हें उनके प्रमुख अभिलक्षणों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। वैसे तो लगभग 70 प्रकार की स्टिच को चलन में देखा जा सकता है, परन्तु उनमें से 18–20 प्रकार की स्टिच को गारमेन्ट मैन्युफैक्चरिंग उद्योगों मे प्रयोग किया जाता है। टेलरिंग उद्देश्यों के लिए केवल दो से तीन प्रकार की स्टिच का प्रयोग किया जाता है।

इन्ट्रा–लूपिंग – इसमें धागे के एक लूप को उसी धागे से बनाए हुए दूसरे लूप से पास किया जाता है।

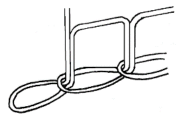

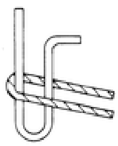

इन्टरलूपिंग – इसमें धागे के एक लूप को एक दूसरे धागे से बनाए गए लूप से पास किया जाता है।

इन्टरलेसिंग – इसमें एक धागे को, एक दूसरे धागे या दूसरे धागे के लूप के ऊपर या उसके आसपास से पास किया जाता है।

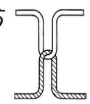

सिंगल थ्रेड चेन स्टिच– इस श्रेणी के अन्तर्गत एक अकेले धागे द्वारा इन्ट्रा–लूपिंग तकनीक का प्रयोग करते हुए सिलाई की जाती है। इस श्रेणी के अन्तर्गत सभी सिलाईयां कच्ची होती हैं तथा अस्थायी उद्देश्यों के लिए प्रयोग की जाती हैं। इस श्रेणी के अन्तर्गत सिलाई का शुरुआती एवं अंतिम सिरे पर बांधने या बैक स्टिचिंग की आवश्यकता होती है, ताकि सिलाई ना खुलने पाए। इसे प्रायः ब्लाइंड स्टिचिंग, किनारों पर सिलाई, बटन लगाने, बटन होल्डिंग, गारमेन्ट कम्पोनेन्ट को एकत्रित करने, अस्थायी पोजीशनिंग के लिए प्रयोग किया जाता है।

स्ट्रेट् (सीधी) स्टिच– एक सीधी स्टिच, सिलाई में सबसे आमतौर पर प्रयोग की जाने वाली स्टिच होती है। एक सीधी स्टिच एक मजबूत स्टिच होती है, इसमें टॉ (ऊपरी धागे) पर बिलकुल सीधी सिलाई होती है, तथा बॉटम (बॉबिन थ्रेड) पर एक सिलाई होती है, तथा नियमित दूरियों पर धागों की इन्टरलॉकिंग होती है। एक सीधी स्टिच में स्टिच की लम्बाई में एडजस्टमेन्ट किया जाता है। एक बहुत ही छोटी स्टिच टाइट होती है तथा उसे हटाना कठिन होता है, जबकि लम्बी स्टिच को हटाना आसान होता है। सबसे लम्बी सम्भव सीधी स्टिच को एक बैस्टिंग स्टिच माना जाता है, जिसे हटाया जाना होता है। जब किसी स्टिच के कारण आपका कपड़ सिकुड़ता है, तो स्टिच की लम्बाई बढ़ाने के

द्वारा उसका आसानी से समाधान किया जा सकता है। सिलाई मशीन पर ऊपरी धागे के लिए टेंशन एडजस्टमेन्ट उपलब्ध होता है, तथा बॉबिन केस पर एक पेंच द्वारा उपलब्ध होता है।

आप प्रयोग की जाने वाली स्टिच की लम्बाई के आधार पर विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए सीधी स्टिच का प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए बैस्टिंग या गैदरिंग के लिए आप एक लम्बी स्टिच का प्रयोग करेंगे, वहीं ब्लाउज पर सिलार्ठ के लिए आप एक छोटी स्टिच का प्रयोग करेंगे।

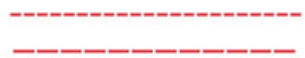
स्ट्रेट (सीधी) स्टिच

जिगजैग स्टिच – एक जिगजैग स्टिच बहुत सारे अंग्रेजी के डब्लू अक्षर की एक पंक्ति जैसी प्रतीत होती है। जिगजैग स्टिच को आमतौर पर एक सीम फिनिश के रूप में कच्चे किनारों को बंद करने के लिए प्रयोग किया जाता है। एक सीम फिनिश के रूप में, स्टिच के एक किनारे को कपड़े के किनारे से दूर सिला जाता है, ताकि कपड़े के धागे – जिगजैग स्टिच के धारों के अंदर बंद रहें, तथा जिगजैग स्टिच के कारण बाहर नहीं निकल पाते हैं।

जिगजैग स्टिच की लम्बाई एवं चौड़ाई को एडजस्ट किया जा सकता है। स्टिच की लम्बाई जितनी कम होगी, डब्ल्यू का आकार उतना ही संकुचित रहेगा। स्टिच चौड़ाई के एडजस्टमेन्ट से निर्धारित होता है कि डब्ल्यू की आकृति कितनी चौड़ी होगी।

जिगजैग स्टिच एक दूसरे के बहुत निकट होती हैं (स्टिच की लम्बाई बहुत कम होती है), इन्हें सैटिन स्टिच कहा जाता है, तथा इन्हें सजावट के लिए प्रयोग किया जाता है। एक सीधी स्टिच की तुलना में एक जिगजैग स्टिच अधिक फैलती है, इसलिए ये फैलने वाले कपड़ों या इलास्टिक पर उपयोग के लिए अधिक बेहतर होती है। यदि आपके पास एक सर्जर नहीं है, तो आप अपनी सीम को फिनिश करने के लिए आप एक जिगजैग स्टिच का प्रयोग कर सकते हैं। आप बटनहोल के लिए भी अपनी जिगजैग स्टिच का प्रयोग कर सकते हैं, परन्तु अधिकांश मशीनों में उसके लिए एक विशेष स्टिच होती है।

जिगजैग स्टिच

ओवरलॉक स्टिच– वर्तमान समय की सिलाई मशीनों पर अधिकांश ओवरलॉक–प्रकार स्टिच को इस प्रकार डिजाइन किया जाता है, कि वे एक ही चरण में सीम को स्टिच एवं फिनिश कर सकें, जिससे वे ओवरलॉक स्टिच को सिम्युलेट करते हैं जो आप रेडीमेड गारमेन्ट पर देखते हैं।

ओवरलॉक जिसे ''सर्जिंग'' या ''सर्जर स्टिच'' भी कहते हैं, इसे एक से लेकर चार धारों, एक या दो सुईयों, तथा एक या दो लूपर से बनाया जा सकता है। ओवरलॉक सिलाई मशीनों में आमतौर पर नाइव लगी होती हैं, जो ट्रिम करती हैं अथवा स्टिच के ठीक सामने किनारा बनाती हैं। बुनाई वाले या फैलने वाले कपड़ों में वस्त्र सिलाई के लिए घरेलू एवं औद्योगिक ओवरलॉक मशीनों का आमतौर पर प्रयोग किया जाता है, जिसमें कपड़ा इतना हल्का होता है कि सिलाई को दबाकर खोलने की आवश्यकता नही होती है, तथा किनारों को खुलने से बचाने की आवश्यकता नहीं होती है।

दो चार धागों का प्रयोग करने वाली मशीनें सबसे आम हैं, तथा एक मशीन को नियमित रूप से विभिन्न प्रकार की ओवरलॉक स्टिच के लिए कॉन्फिगर किया जा सकता है। पांच या अधिक धागों वाली ओवरलॉक मशीनें एक सुई और लूपर की सहायता से ए बनाती है, तथा शेष सुईयों ओर लूपर की सहायता से एक ओवरलॉक स्टिच बनाती हैं। इस संयोजन को ''सेफ्टी स्टिच' कहा जाता है।

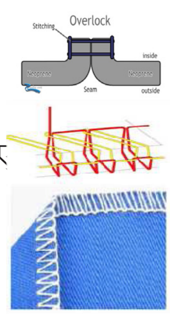

सजावटी स्टिच – सजावटी स्टिच को सामान्य स्टिच की ही भांति सिला जा सकता है। आमतौर पर ये सामान्य स्टिच से अधिक चौड़ी होती हैं। सजावटी सिलाई – बेसिक सिलाई का कार्य करती है, कपड़े के किनारे पर दो फैब्रिक फिनिशिंग को जोड़ती है अथवा कपड़े को प्लेट या डार्ट से स्टिच करती है। यह कपड़े को स्युइंग फुट और फिड़ डग के नीचे रखती है, तथा कपड़े को सही दिशा में फीड करती है। सजावटी स्टिच दो मूलभूत श्रेणियों में आती हैं: बंद, सैटिन प्रकार स्टिच तथा खुली, ट्रेसरी–प्रकार स्टिच। आप बहुत सी नई मशीनों को प्रोग्राम कर सकती हैं, जिससे इन स्टिच को दूसरी स्टिच के साथ संयोजित किया जा सकता है, तथा डिजाइन को लम्बा बनाकर एक बोल्ड सजावटी प्रभाव दिया जा सकता है, तथा किसी का नाम भी स्टिच किया जा सकता है।

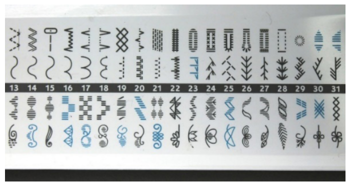

कवर स्टिच – एक कवर स्टिच में मूल रूप से 2 या 3 नीडल बॉबिन रहित टॉप स्टिचिंग होती है, जो कुछ लचीलापन प्रदान करता है। इसे एक ओवरलॉक्ड (सर्ज्ड) सीम पर प्रयोग करना आवश्यक नहीं होता है, परन्तु आमतौर पर किया जाता है। सीम का पीछे भाग एक सीढ़ी पैटर्न या मिलती जुलती विन्यास की रचना करता है तथा स्टिचिंग की लाइनों को आगे पीछे जोड़ता है। यह उस इफेक्ट से मिलता जुलता है, जो आप घर पर एक डबल नीडल वाली सिलाई मशीन से प्राप्त करेंगे। वैसे ये वास्तविक डबल नीडल से थोड़ा सा भिन्न है, क्योंकि इनमें दो बॉबिन होती हैं, इसलिए उनकी सिलाई लाइन पीछे भाग पर लाइन से लाइन जुड़ी नहीं होती है। टॉप, स्ट्रेट स्टिचिंग की समांतर पंक्ति जैसा प्रतीत होता है, तथा नीचे– सर्जर लूप्स जैसा प्रतीत होता है, जो नीचे मुड़े हुए कच्चे किनारों को कवर करता है। कभी–कभी ''पिछला'' या लूपी साइड को एक डिजाइन फीचर के रूप में ऊपर का भाग पर सिला जाता है, विशेष तौर पर एक्टिववियर में।

फ्लैटलॉक स्टिच – एक ओवरलॉक के विपरीत एक फ्लैटलॉक स्टिच में अंदर की तरफ कोई लेयर नहीं होती है, सीम को एकसाथ जोड़ा जाता है। इसके बारे में इस प्रकार से सोचिए, अनुप्रयोग में आप वर्णित कर रहे हैं कि वास्तव में कोई सीम एलाउन्स नहीं है, क्योंकि कपड़े के काटे गए किनारे एक दूसरे के साथ जोड़े जाते हैं, तथा धागे की सहायता से एक सिंगल लेयर में फ्लैट जोड (ज्वाइन) किए जाते हैं। ऊपर और नीचे पर फ्लैटलॉक स्टिचिंग दो कुंदा हुआ भाग को जोड़ती है।

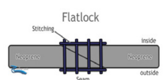

ब्लाइंड स्टिच – सिलाई में ब्लाइंड स्टिच एक ऐसा तरीका है, जिससे कपड़े के दो टुकड़ों को इस प्रकार से जोड़ा जाता है कि सिलाई वाला धागा दिखाई ना पड़े, अथवा लगभग अदृश्य रहे। एक सिलाई मशीन भी एक ब्लाइंड हेम बना सकता है। ऐसी स्थिति में, एक स्पेशलिटी प्रेसर फुट की आवश्यकता होती है। एक ब्लाइंड स्टिच का निर्माण करने के लिए एक सिलाई मशीन के साथ ज़िगज़ैग स्टिच तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है।

स्टे स्टिचिंग – स्टे स्टिचिंग वैसे तो पूर्णरूप से तेयार वस्त्र में अदृश्य होती है, परन्तु यह हिडेन बोन का हिस्सा होती है, जो इसे आकृति एवं मज़बूती प्रदान करता है, तथा एक साथ–सुथरी एवं एकसमान पूर्णता प्रदान करता है। यह बक्र या कोना वाला किनारों पर सीम एलाउन्स के अन्दर स्टिचिंग की

एक पंक्ति है। इसे आमतौर पर नेकलाइन पर, आर्महोल के आसपास, तथा बायस ग्रेन लाइनों जैसे कि एक वी नेक पर पाया जा सकता है। स्टे स्टिचिंग किसी वस्त्र के आकृति को बनाए रखने में सहायता करने के लिए एक सिंगल कपड़ा पर सिलाई की एक पंक्ति को सिलने का एक तरीका है। यह बक्र या आड़ा किनारों पर उपयोगी है, और इस तरह से, जो सिलाई प्रक्रिया के दौरान स्टिच फैल सकता था, वो अब नहीं होता है। स्टे स्टिचिंग कपड़े के फोल्ड्स पर भी उपयोगी होती है, जैसे कि टक्स, जब आप दूसरे भाग को जोड़ते हैं तो ये उसे अपने स्थान पर रोके रखने में सहायता करती है। स्टे स्टिचिंग, निर्माण प्रक्रिया के दौरान कटे हुए किनारों को फैलने से रोकने में सहायता करती है। इसके बिना सम्भव है कि आपको एक सीम दूसरी सीम से अधिक फैली हुई मिलेगा, और वे मैच ना कर रहे होंगे। अथवा एक नेकलाइन फैल सकती है, तथा रिक्त स्थान हो सकता है, अथवा उसकी फेसिंग से मैच ना करे।

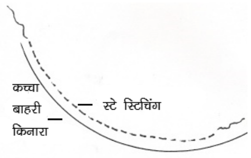

बास्टिंग (कच्ची सिलाई करना)– सिलाई में, कच्ची सिलाई इसलिए की जाती है ताकि उस त्वरित, अस्थायी सिलाई को बाद में हटाया जा सके। कच्ची सिलाई का विभिन्न तरीके से प्रयोग किया जाता हैः किसी सीम या ट्रिम को अस्थायी रूप से रोकने के लिए ताकि उसे बाद में स्थायी रूप से सिला जा सके, आमतौर पर हाथ से या मशीन से की गई एक लम्बी सिलाई को कच्ची सिलाई या बास्टिंग स्टिच कहा जाता है।

कच्ची सिलाई का उद्देश्य यह होता है कि स्थायी सिलाई किए जाने तक कपड़े को उसके स्थान पर अस्थायी रूप से रोककर रखा जाए। उदाहरण के लिए – एक सीम की कच्ची सिलाई करना, जहां बाद में एक जिपर लगाया जाएगा। एक सेन्टर बैक ड्रेस जिपर के लिए, ड्रेस के पिछले भाग को दो आधे हिस्सों में बनाया जाता है। ड्रेस के बॉटम से लेकर जिपर लगाए जाने वाले स्थान तक एक सेन्टर बैक सीम सिली जाती है। उस स्थान से लेकर शीर्ष तक सीम पर कच्ची सिलाई की जाती है। ऐसा करने से सीम के किनारे अपने स्थान पर ही रहते हैं, जबतक कि जिपर को लगा नहीं दिया जाता है। अंतिम सिलाई करने के बाद कच्ची सिलाई को हटा दी जाती है। उदाहरण के रूप में हाथ से कच्ची सिलाई का चित्र (1) तथा मशीन से कच्ची सिलाई का चित्र (2) देखें।

1
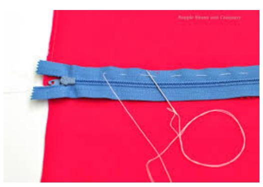

2

स्टिच का चयन – किस प्रकार के फैब्रिक में और कैसे करें:

एक टेलर (दर्जी) को यह सीखना जरूरी है कि विभिन्न प्रकार की फैब्रिक की स्टिचिंग के लिए उचित स्टिच का चयन कैसे करे क्योंकि अलग–अलग किस्म की कपड़ा का वजन, मोटाई, लचीलापन, बुनाई अलग–अलग होती है; उचित स्टिच का चयन कर हम कपड़े की सिलाई के दौरान होने वाले नुकसान को कम कर सकते हैं और सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह सुरक्षित रहें। इसलिए, उसे थोड़ा और विस्तार से सीखना होगा कि किस प्रकार की कपड़ा के लिए कौन–सा स्टिच सर्वोत्तम होगा।

• **सूती** – कार्य करने के लिए सबसे आसान कपड़ा है। इसका उपयोग कर किसी भी परिधान का निर्माण करते समय आप किसी भी स्टिच का उपयोग कर सकते हैं। एक सीधा स्टिच सबसे सामान्य रूप से उपयोग किया जाता है और पेशेवर वस्त्रों में किनारे को एक सर्जर का इस्तेमाल करते हुए पूरा किया जाता है। यदि सूती वस्त्र बहुत भारी है, तो लंबे स्टिच का उपयोग करना बेहतर होगा और आप एक डबल सिम का भी उपयोग कर सकते हैं।

• **निट्स और ऊनी कपड़े** – इनके लिए एक लॉकस्टिच, एक ओवर लॉक या कवर सीम की आवश्यकता होती है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि कपड़ा के सिराओं को मजबूती से सुरक्षित किया जाए, ताकि वे खुल कर उधड़े नहीं। स्टिचिंग के दौरान आप एक सामान्य सीधे (स्ट्रेट) स्टिच का उपयोग कर सकते हैं।

• **रेशम (सिल्क)** – जैसा कि हम सभी जानते हैं कि रेशम बहुत ही कोमल होती है, इसलिए उनके साथ अल्प खिंचाव का उपयोग करना श्रेष्ठ होता है और सिलाई करते समय कपड़ा को सुई के आगे और पीछे मजबूती से पकड़ना आवश्यक होता है। यह सुनिश्चित करता है कि वस्त्र मुड़े या सिकुड़ने नहीं पाएं।

• **पॉलिस्टर और एलास्टिक्स** – इनके साथ जिगजैग स्टिच का उपयोग करने की अनुशंसा की जाती है ताकि इसमें लचीलेपन को बनाएं रखा जा सके और उसके मुड़ने के लिए वहां पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो। इन सामग्रियों के किनारों को सुरक्षित रखना महत्वपूर्ण है, ठीक वैसे ही जैसा आप निट्स के लिए करते हैं।

गतिविधि :

• प्रशिक्षक सिलाई के लिए विभिन्न कपड़ों के लिए उपयुक्त स्टिच का चयन करने और आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाली कपड़ों के प्रकार के बारे में बताएंगे।

सत्र 7:

थ्रेडिंग की तकनीक

अधिकांश मशीन लगभग एक ही तरीके से थ्रेड को लपेटती हैं, केवल कुछ मामूली बदलाव को छोड़कर। थ्रेड को अवश्य ही स्पूल से थ्रेड टेक–अप लीवर और टेंशन प्लेट से होते हुए नीडल तक मार्ग में आने वाले विभिन्न थ्रेड गाइड से होकर गुजरना चाहिए।

मैन्युअल थ्रेडिंग

- प्रेशर फूट को उठाएं और नीडल को उसकी उच्चतम स्थिति, या तो हैंडव्हील को अपनी ओर उठाते हुए, या नीडल बटन को अप/डाउन दबाते हुए तक उठाएं। थ्रेड के एक स्पूल को स्पूल पुन पर रखें। स्पूल को उसके साथ पकड़ कर रखने के लिए, स्पूल होल्डर को पुश करें, यदि एक मशीन के साथ उपलब्ध कराया जाता है। एक अल्प लंबाई का धागा खींचे।

- थ्रेड के सिरे को मशीन के ऊपर से लेकर फर्स्ट थ्रेड गाइड तक लेकर जाएं और उसे गाइड में प्रविष्ट कराएं– यह अक्सर गोलाकार होता है ताकि आप थ्रेड को इसके अंदर आसानी से प्रविष्ट करा सके। वहां कम से कम एक थ्रेड़ गाइड होगा, दो या अधिक भी हो सकता है, जिसके कारण थ्रेड स्पूल से टेंशन मैकेनिज्म की ओर जाता है।

- थ्रेड को नीचे की ओर मशीन की ओर टेंशन मैकेनिज्म के माध्यम से लेकर आएं। यह अक्सर टॉप पर टेंशन डायल के साथ मशीन के सामने टेंशन डिस्क की एक जोड़ी होती है। कुछ मशीनों में डिस्क मशीन के सामने जाने वाले चैनल के अंदर छिपा रहता है जबकि एक साइड में टॉप पर टेंशन डायल स्थित रहता है। थ्रेड को दो डिस्क के बीच से होकर और चेक स्प्रिंग के ऊपर से होकर जाने की जरूरत होती है; इनके बीच से थ्रेड को सही तरीके से प्राप्त करना बेहतर सिलाई प्राप्त करने के लिए आवश्यक है : यह मजबूती से अपने स्थान पर स्थित है : ऐसा सुनिश्चित करने के लिए इसे ऊपर की ओर हल्का झटका दें।
- टेंशन मैकेनिज्म से, थ्रेड को टेक–अप मैकेनिज्म तक जाने की जरूरत होती है, जो मशीन के अगले हिस्से में स्थित लीवर है जो नीडल द्वारा सिलाई करने पर ऊपर–नीचे जाता है। टेक–अप लीवर के माध्यम से थ्रेड को लेकर जाएं : अक्सर गोलाकार होता है ताकि आप इससे होकर थ्रेड को स्लाइड कर सके, परंतु आपको एक विशाल आकार के आई के माध्यम से थ्रेड को गुजारना होगा।
- अब थ्रेड को नीडल की तरफ तक–अप की बाईं ओर मशीन के सामने नीचे जाने की जरूरत है। अब पेंदी में मशीन के सामने से इसे थ्रेड गाइड के माध्यम से और नीडल बार के ऊपर स्थित एक नीडल के माध्यम से स्लाइड करें।
- थ्रेड को नीडल के आई से होकर उस दिशा में प्रविष्ट कराएं जिसका संकेत मैन्युअल में किया गया है : अधिकांश मशीन में यह आगे से पीछे की ओर होगा। इससे होकर हल्के से थ्रेड के सिरे को खींचे, और इसे वापस खींचने के लिए पर्याप्त रूप से लंबा रखें ताकि जब आप सिलाई करना शुरू करते हैं, तब इसे वापस खींचा जा सके।

एक ऑटो थ्रेडर का इस्तेमाल करना

अनेक आधुनिक मशीन में एक सेमिआटोमेटिक नीडल थ्रेडर होता है, जिससे समय की बचत हो सकती है। अलग–अलग मॉडल्स में थोड़ा भिन्न सिस्टम हो सकता है, परंतु आधारभूत निर्देश समान होता है।

- सुनिश्चित करें कि नीडल अपने सबसे उच्चतम बिंदु पर है, या तो हैंड व्हील को घुमाते हुए या नीडल बटन को अप/डाउन दबाते हुए। एक अंगुली से नीडल थ्रेडर को दबाएं, जैसे ही यह नीचे आता है वैसे ही एक छोटा हुक नीडल आई के चारों और उसके माध्यम से होकर गुजरता है।
- थ्रेड को नीडल तक ले जाएं और इसे प्लास्टिक हुक के अंदर से थ्रेडर के बाएं ओर, नीडल के आई के माध्यम से होकर आने वाले छोटे हुक, और दूसरी ओर अन्य साइड में गाइड करें।
- धीरे–धीरे नीडल थ्रेडर हैंडल को मुक्त करें ताकि यह रेस्टिंग पोजीशन पर वापस चला जाएं। जब थ्रेड आई से होकर गुजरता है तब छोटा से हुक के चलते, धागे का एक लूप बनता है। नीडल के पीछे से थ्रेड के लूप को पकड़े और अंत तक खींचे।

थ्रेड टेंशन (खिंचाव)

टॉप (नीडल) थ्रेड और बॉटम (नीडल) थ्रेड दोनों को मशीन की सिलाई करने के दौरान तनाव युक्त बनाएं रखा जाता है, और बेहतर रेखा में सिलाई करने के लिए, फैब्रिक के दोनों ओर तनाव समान होना चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए, एक नम्बर डायल को काम में लेते हुए केवल टॉप थ्रेड पर ही अक्सर तनाव को समायोजित किया जाता है। दुर्लभ मामलों में ही बोब्बिन के तनाव को समायोजित करने की आवश्यकता होती है, जिसे बोब्बिन केस में एक स्क्रू को घुमाकर किया जा सकता है, लेकिन

अधिकांश निर्माता बॉटम के तनाव को फैक्ट्री सेटिंग पर ही रहने देने की अनुशंसा करते हैं।

आप मशीन के सामने टेंशन प्लेट के निकट,एक डायल को घुमाकर टॉप थ्रेड टेंशन को समायोजित कर सकते हैं। विशेष मोडल के लिए सामान्य तनाव को किसी न किसी तरीके से डायल पर हाईलाइट किया जाता है, ताकि विशेष स्थितियों के लिए तनाव को समायोजित करने के बाद आप सामान्य स्थिति में आसानी से वापस लौट सके।

बोब्बिन केस को बाहर निकाल कर और बाहर एक छोटे से स्क्रू को घुमाकर आप बॉटम थ्रेड के टेंशन को समायोजित कर सकते हैं।

धागे के टेंशन (खिंचाव) को बनाए रखना

साफ–सुंदर सिलाई सुनिश्चित करने के लिए, मशीन पर धागे में उचित तनाव बनाएं रखना आवश्यक है। यहां हम दो प्रकार के टेंशन (खिंचाव) के बारे में सीखेंगे:

- **ऊपरी टेंशन** – यह आपके थ्रेड स्पूल में फीड करने वाले धागे, टेंशन डिस्क आपकी नीडल में थ्रेड गाइड के धागे का खिंचाव या दृढ़ता है। नई मशीनों में, एक टेंशन डायल होता है जो आपको टेंशन डिस्क को घुमाते हुए खिंचाव को समायोजित करता है, जबकि पुराने मशीनों में एक स्क्रू होता है, जो धागा गुजरने वाले दो डिस्क पर दबाव डालकर धागे पर खिंचाव उत्पन्न करता है। यहां ध्यान देना आवश्यक है, कि विभिन्न प्रकार के धागे के लिए अलग–अलग खिंचाव की आवश्यकता होती है। धागा जितना मोटा होता है, उस पर उतना ही कम खिंचाव, दबाव या दृढ़ता की आवश्यकता होती है।

- **निचला टेंशन** – यह बोब्बिन केस द्वारा बोब्बिन से निकलने वाले धागा पर दिएगये तनाव खिंचाव को सूचित करता है। बोब्बिन केस पर एक स्क्रू होता है जो आपको धागे के खिंचाव को घटाने–बढ़ाने की मे मदद् करता है।

यह अनुभव पर आधारित बेहतर नियम है कि जब कभी आप अलग मोटाई के धागे का उपयोग या तो बोब्बिन या मेन स्पूल में करते हैं, तो एक पुराने कपड़े पर सिलाई कर धागे के तनाव की जांच करें। यदि तनाव गड़बड़ हो जाता है तो इसका परिणाम गलत सिलाई होगा। दो मुख्य समस्याएं और उसका कारण इस प्रकार हैः

1. यदि बोब्बिन का खिंचाव बहुत अधिक ढीला है या बोब्बिन के धागे की तुलना में ऊपरी धागे का खिंचाव बहुत अधिक है, तो बोब्बिन धागा कपड़े के दाईं ओर दिखाई देगा।

2. यदि ऊपरी खिंचाव बहुत ढीला है, या इसकी तुलना में बोब्बिन का खिंचाव बहुत अधिक है, तो इसके परिणामस्वरूप कपड़े की गलत तरफ सिलाई दिखाई देने लगेगी। समान और समतल सिलाई प्राप्त करने के लिए इन दोनों के खिंचावों को अवश्य ही संतुलित किया जाना चाहिए। गलत खिंचाव सेट करने पर कपड़े का सिकुड़ना चालु हो जाता है।

खिंचाव (टेंशन) की समस्या को कैसे ठीक करें

यहां हम विभिन्न प्रकार के खिंचाव को सेट करने के बारे में सीखेंगे। बोब्बिन के खिंचाव को स्पर्श करने से बचें और देखें कि क्या आप केवल ऊपरी खिंचाव को समायोजित कर समस्या का समाधान कर सकते हैं। यह एक अस्थायी समाधान होगा। एक सामान्य खिंचाव प्रबंधन के लिए, बोब्बिन के धागे तथा सिलाई के धागे व उपयोग किए जाने वाले वस्त्र के प्रकार पर ध्यान दें। उसके बाद सुई और बोब्बिन में धागा पिरोयें, और एक नमूना सिलाई करके देखें कि क्या सिलाई ठीक से हो रही

है। दोनों खिंचावों को समायोजित करें जब तक आपको समरूप सिलाई प्राप्त नहीं होती है। एक बार एकदम सही होने के बाद, आप जब भी कोई धागा बदलते हैं, तो आपको केवल मामूली समायोजन करना पड़ता है।

इसके साथ ही ध्यान दें कि जब आप गलत सिलाई होता हुए देखते हैं, तो यह केवल धागे के खिंचाव से ही संबंधित नहीं होता है। आप निम्नलिखित में से कोई भी गलती कर चुके होते हैं। जैसे कि :

1. थ्रेड स्पिंडल का उपयोग करने के बजाए आप बोब्बिन स्पिंडल का उपयोग किये हैं और इस प्रकार धगा के फीडिंग प्रभावित हुई है।

2. थ्रेड गाइड के माध्यम से सही रूप से धागा को प्रविष्ट नहीं कराये हैं।

3. धागा प्रविष्ट कराते समय प्रेशर फूट को नीचे नहीं किये हैं।

4. बोब्बिन चैम्बर में या टेंशन डिस्क के बीच में लिंट और गंदगी खिंचाव को प्रभावित कर सकती है। इसलिए पहले इनकी सफाई करना हमेशा एक अच्छा विचार है। अगर आपको अभी भी एक समस्या का सामना करना पड़ रहा है, तो आपको सुई की स्थिति देखनी चाहिए। क्षतिग्रस्त सुइयों के कारण भी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। अनुभव के साथ, आप देखेंगे कि अलग–अलग वस्त्रों को अलग–अलग सुइयों और सुई प्लेटों और धागे की ज़रूरत होती है ताकि सही स्टिच को सुनिश्चित किया जा सके और नुकसान को रोका जा सके।

अन्य मामूली समस्याएं, समायोजन और मरम्मती

सिलाई करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ सामान्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आम तौर पर, इन समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है। हालांकि, इसके लिए आपके पास मशीन के गतिशील भागों, उनके कार्य और एक दूसरे के संबंध का कम से कम बुनियादी ज्ञान होना आवश्यक है। आपके लिए यह एक आसान सूची दी गई है:

- **टेंशन डिस्क को आगे–पीछे करने पर भी तनाव में परिवर्तन नहीं होता** – अधिकांश समय ऐसा तब होता है जब टेंशन डिस्क के बीच लिंट या मैल फंस जाता है।

- **टॉप थ्रेड टूटते रहता है** – यह एक टूटा हुआ बोब्बिन हुक या सुई प्लेट पर खुरदुरे किनारों के कारण हो सकता है। सुई प्लेट के किनारों को पॉलिश करने के लिए आप एक एमरी (कर्स्न पत्थर) बोर्ड का उपयोग कर सकते हैं लेकिन हुक टिप के आकार को बदलने के बारे में सावधान रहें। इसका एक और कारण यह हो सकता है कि टॉप थ्रेड का खिंचाव बहुत अधिक होता है।

- **नीडल टूटते रहता है** – ऐसा ऊपरी खिंचाव के बहुत अधिक होने के कारण हो सकता है या सुई आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाले कपड़े के लिए बहुत छोटी होती है। अन्य कारण यह है कि हुक टाइम बंद होता है। यह जांचने के लिए एक नई सुई प्रविष्ट कराएं और फ्लाई व्हील को धीरे धीरे आगे बढ़ाएं। यह देखने के लिए जांचें कि सुई का नोक हुक धागा से जुड़ने के लिए आता है, तो रगड़ तो नहीं रहा है।

- **बोब्बिन थ्रेड को टॉप थ्रेड द्वारा नहीं उठाया जाता है** – बोब्बिन हुक सुई से टॉप थ्रेड को पकड़ता है और सिलाई करने के लिए बोब्बिन धागे के साथ गूंथता है। यदि टाइमिंग के ऑफ होने के कारण या सुई के पॉइंट के कुंद या मुड़े होने के कारण, सुई में हुक नहीं है, तो टॉप थ्रेड द्वारा बोब्बिन थ्रेड को नहीं उठाया जाएगा। यदि सुई में धागा उचित प्रकार से नहीं लगा हुआ है, तो भी

ऐसा हो सकता है। आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हुक का सामना करने के लिए सुई की सपाट को प्रविष्ट कराया जाएं।

- **कपड़ा ठीक से फीड नहीं होता है** – ऐसा होने के कई कारण हैं। शायद फीड डॉग गंदा है और कपड़ा पकड़ने के लिए प्लेट से बाहर आने में सक्षम नहीं है। फैब्रिक को आगे बढ़ने में मदद करने के लिए प्रेस फूट पर्याप्त नीचे दबाव डालने में सक्षम नहीं है। यहां तक कि नीडल प्लेट का खुरदुरा किनारा कपड़े को पकड़कर आगे बढ़ने से रोक सकता है। इन सभी पहलुओं की जांच करें और आपको समाधान मिलने की बहुत अधिक संभावना होगी।

गतिविधि : विभिन्न प्रकार की सिलाई का अभ्यास

यहां 6 शीट दी गईं हैं, जिसकी आप प्रैक्टिस कर सकते हैं:

- सीधी रेखा में सिलाई
- ज़िगज़ैग सिलाई
- समकोण पर, दाएं और बाएं कोनों को मोड़ना
- अन्य कोनों और बिन्दुओं को मोड़ना
- कर्व्स (धुमावदार) धुमावदार और सर्कल (चक्राकार) सिलाई करना

विभिन्न प्रकार की सिलाई का अभ्यास करने के लिए, निम्नलिखित शीट्स का उपयोग करें जो इस मैनुअल के अंत में संलग्न है। आप अधिक से अधिक अभ्यास करने के लिए, समान रेखा चित्रों के अधिक से अधिक शीट पर अभ्यास कर सकते हैं।

- सीधी रेखा में सिलाई करने का अभ्यास करें। प्रत्येक लाइन के साथ सिलाई करें। यथासंभव सीधी रेखा में सिलाई का अभ्यास करें!

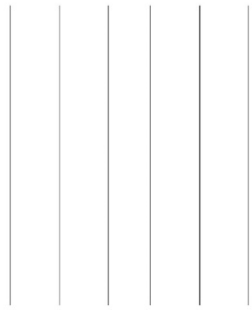

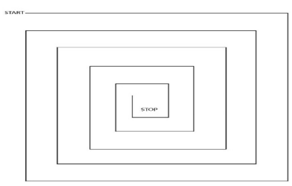

- कोनों को मोड़ने का अभ्यास करें। रेखा के साथ सिलाई करें। जब आप कोने पर पहुंच जाते हैं, नीडल को नीचे रखते हुए, रूकें, अपने प्रेशर फूट को उठाएं, और पेपर को चूल (पिवट) पर रखें। इस तरीके से सिलाई करना जारी रखें जब तक आप बीच में नहीं पहुंच जाते हैं।

- कर्व्स (धुमावदार) लाइन्स और कार्नर की सिलाई करने का अभ्यास करें। प्रत्येक रेखा के साथ सिलाई करें। प्रत्येक कार्नर पर कर्व्स और चूल (पिवट) के साथ सिलाई करें। पीछे सिलाई करना न भूलें।

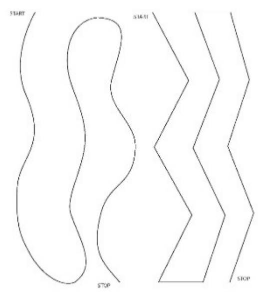

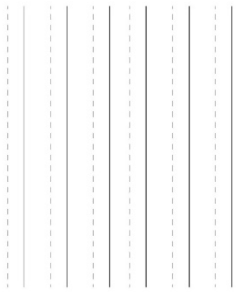

- अपने मार्गदर्शक के रूप में ठोस रेखाओं का इस्तेमाल करें, प्रत्येक लाइन के बाईं ओर 1/2" (13 सेमी) दूरी पर सिलाई करें। प्रत्येक लाइन के शुरू और अंत में सिलाई को रोकना न भूलें!

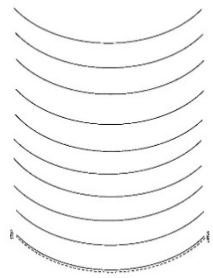

- अपने मार्गदर्शक के रूप में ठोस रेखाओं का इस्तेमाल करते हुए, एक हाथ से प्रत्येक कर्व के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सिलाई करें। प्रत्येक लाइन के शुरू और अंत में सिलाई को रोकना मत भूलें!

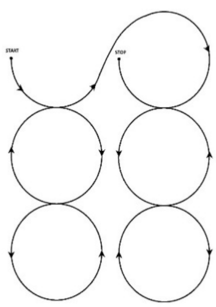

- सर्किल में सिलाई करने का अभ्यास करें। तीर के सिरे द्वारा निर्देशित तरीके से सिलाई करें। प्रत्येक कार्नर पर कर्व्स और पिवट के साथ सिलाई करें। पीछे की ओर सिलाई करना मत भूलें।

तीसरा दिन

सत्र 8:

क्रॉस लिस्ट को देखना और उसका विश्लेषण करना

- प्रत्येक प्रतिभागी क्रॉस लिस्ट को देखेंगे और प्रशिक्षण की प्रगति के बारे में चर्चा करेंगे।

ग्राहक के सटीक माप लेने के संबंध में सूचना

किसी भी गारमेंट पर कार्य शुरू करने से पहले, यह अत्यंत आवश्यक है कि जिस व्यक्ति के लिए गारमेंट की सिलाई किया जाना है, उसकी सटीक माप ली जाएं। ऐसा करने से आप एक अच्छी फिट वाला गारमेंट तैयार करने में सफल होंगे और इससे आपके समय की भी बचत होंगी क्योंकि बाद में आपको गारमेंट में कम से कम बदलाव करने होंगे।

एक व्यक्ति की सही माप लेना आसान कार्य नहीं है। माप लेते समय कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है और इसका अभ्यास कर आप माप लेने की कला में पारंगत हो जाएंगे। माप की तैयारी कैसे करें, और माप कैसे लें, इसके संबंध में नीचे कुछ सामान्य सुझाव दिया गया है।

- दृष्टिगत रूप से शरीर को दो भागों में – कमर के नीचे और कमर के ऊपर – में विभाजित किया गया है। उस सीमारेखा को निर्धारित करने के लिए, उस व्यक्ति के कमर के चारों ओर चौड़ाई पर एक टेप बांधें। यह आपको अन्य मापों को सटीकता के साथ लेने में मदद करेगा।
- माप दो प्रकार का होता है – उदग (वर्टीकल) और क्षैतिज (हॉरिजॉन्टल) ।
- सुनिश्चित करें कि व्यक्ति सीधा खड़ा है और उसके कंधे पर कोई झुकाव नहीं है और उसका पैर भी सीधा है।
- जिस व्यक्ति की माप ली जानी है उसे अपेक्षाकृत एक अच्छी तरह से फिट परिधान पहनना चाहिए ताकि आप उसके शरीर पर विभिन्न बिन्दुओं की माप सही से ले सके।
- यदि व्यक्ति बहुत ही भारी और ढीला वस्त्र पहने हुए है तो आपका माप अनावश्यक रूप से अधिक इंच का होगा।
- शरीर की माप लेने के लिए, एक मापने वाले टेप का इस्तेमाल किया जाना चाहिए और माप लेते समय एक कागज और कलम तैयार रखना चाहिए।
- सुनिश्चित करें कि मापने वाला टेप टूटा या फैला हुआ नहीं है। टेप के लंबे धातुई सिरे का इस्तेमाल उदग्र (वर्टीकल) माप लेने के लिए किया जाता है जबकि गोलाकार धातुई सिरे का इस्तेमाल क्षैतिज (हॉरिजॉन्टल) माप लेने के लिए किया जाता है।
- माप लेते समय आपको उन्हें इस तरीके से लिखना चाहिए कि आप बाद में उन्हें समझने में सक्षम हो सके।
- भारत में हम लोगों की माप इंचों में करते हैं।
- याद रखें कि आप जो माप लेंगे वह क्लॉथ पर ड्राइंग करने के लिए और पैटर्न काटने के लिए अंतिम माप नहीं होगा। कुछ मानक नियमों तथा व्यक्ति की आवश्यकता के आधार पर आप प्रत्येक माप में कुछ इंच जोड़ सकते हैं।
- एक अच्छे दर्जी के रूप में, हमेशा क्लाइंट की सुविधा और इच्छा का सम्मान करें, उनसे कुछ विशेष पहलुओं के बारे में बताने के लिए कहें, जैसे वे अपने सलवार या पैंट को कहाँ बांधना पसंद करेंगे, आप छाती और कमर पर कितना ढीला वस्त्र पहनना पसंद करेंगे। आप जिस कुर्ते या टॉप की सिलाई करने जा रहे है, उसकी लंबाई के बारे में भी पूछें। आप उनसे नेकलाइन और स्लीव की लंबाई के लिए भी इनपुट प्राप्त कर सकते हैं और उसके अनुसार उनकी माप ले सकते हैं।
- साथ ही याद रखें कि किसी महिला या पुरूष माप लेते समय, उनके मापों में थोड़ा अंतर अवश्य होगा।
- लंबाई की माप करते समय, सुनिश्चित करें कि मापने का टेप फर्श के लंबवत है। शरीर के चारों ओर चौड़ाई की माप लेते समय, सुनिश्चित करें कि मापने का टेप फर्श के सामानांतर है। शरीर के चारों ओर गोलाई (मोटाई) की माप लेते समय, सुनिश्चित करें कि मापने का टेप शरीर के निकट रहें परंतु अधिक कसा हुआ नहीं रहें। ऐसा करने से सटीक माप प्राप्त करना संभव होगा।

सामान्य माप

प्रत्येक क्लॉथ की सिलाई करने के लिए आपको एक अलग माप लेने की आवश्यकता होगी, नीचे मानव शरीर के बाहरी ढांचे के लगभग सभी संभव मापों की एक विस्तृत सूची दी गई है। प्रत्येक माप के साथ एक संक्षिप्त व्याख्या भी दी गई है कि आप सबसे सटीक तरीके से वह माप कैसे लेंगे। इसे

पूर्ण रूप से समझने के लिए इस खंड के अंत में दिए गए चार चित्रों को देखें जिसमें सचित्र तरीके से दिखाया गया है वयस्कों और बच्चों के लिए इन मापों को कहाँ से लेने से सटीक माप प्राप्त होगा।

- **कालर के चारों ओर** – इसकी माप गर्दन के आधार और उसके चारों ओर से ली जाती है। इसे बहुत अधिक कसा हुआ या बहुत अधिक ढीला नहीं होना चाहिए।
- **कंधें की चौड़ाई** – इसकी माप गर्दन के आधार से लेकर बाँह के शुरू होने तक ली जाती है।
- **छाती की चौड़ाई** – इसकी माप छाती के सबसे चौड़े हिस्से पर ली जाती है, जो ठीक बाँह के आधार से शुरू होता है।
- **पीठ की चौड़ाई** – इसकी माप पीछे के पीठ के सबसे चौड़े हिस्से पर, एक किनारे से लेकर दूसरे किनारे तक, बाँह के आधार से ली जाती है।
- **धड़ के चारों ओर** – मापने की टेप को बाहँ के ठीक आधार के नीचे चारों ओर घुमाते हुए इसकी माप ली जानी चाहिए। धड़ के ऊपर इसके सबसे प्रमुख भाग के ऊपर से टेप को बिना कसे हुए ले जाना चाहिए। टिप्पणीः पुरूषों, लड़कियों और लड़कों के लिए, इस माप को अराउंड चेस्ट कहते है और इसे समान तरीके से लिया जाता है, परंतु अगले हिस्से में टेप को छाती के सबसे चौड़े हिस्से से होकर गुजरना चाहिए।
- **वक्ष के चारों ओर** – इसकी माप धड़ के नीचे से, ठीक इसके आधार पर, और वक्ष के चारों ओर से, टेप के माप को शरीर के माप के साथ समायोजित करते हुए ली जाती है।
- **कमर के चारों ओर** – इसकी माप ठीक उसी स्थान पर ली जाती है, जहाँ कमर के चारों ओर फीता बांधा जाता है। यह माप अवश्य ही सटीक होनी चाहिए।
- **कंधे से कमर की लंबाई (पीठ)** – इसकी माप पीठ पर, कंधे के "ऊपर" से (ठीक गर्दन के आधार पर), पीठ के साथ नीचे की ओर उदग्र रूप से आगे बढ़ते हुए उस बिंदु तक ली जानी चाहिए, जहाँ फीते को कमर के चारों ओर बांधा जाता है।
- **कंधे से कमर की लंबाई (अगला हिस्सा)** – यह माप अगले हिस्से पर, कंधे के "ऊपर" से (ठीक गर्दन के आधार पर), अगले हिस्से के साथ नीचे की ओर उदग्र रूप से आगे बढ़ते हुए, धड़ के मुख्य भागों से गुजरते हुए, उस बिंदु पर ली जानी चाहिए, जहाँ फीते को कमर के चारों ओर बांधा जाता है।
- **धड़ की ऊँचाई** – इसकी माप अगले हिस्से पर, कंधे के "ऊपर" से, ठीक गर्दन के आधार पर, अगले हिस्से के साथ नीचे की ओर धड़ के टिप तक उदग्र रूप से आगे बढ़ते हुए, ली जाती है।
- **धड़ के पृथक्करण के लंबाई की माप** – इसकी माप धड़ के टिप या सबसे प्रमुख हिस्से पर ली जाती है। (टिप से टिप तक)।
- **बाँह की लंबाई** – इसकी माप मुड़े हुए हाथ के साथ, कंधे या बाँह के आधार से, कलाई (कफ्फ) के प्रमुख हड्डी तक ली जाती है।
- **कोहनी की लंबाई** – इसकी माप कंधे से लेकर केहुनी के टिप तक ली जाती है।
- **बाँह के चारों ओर** – इसकी माप बाँह के सबसे चौड़े हिस्से पर, इसके चारों ओर घुमते हुए ली जाती है।
- **नितंब के चारों ओर** – इसकी माप ग्लुटास या नितंब के चारों सबसे मुख्य हिस्से पर ली जाती है।
- **नितंब की उंचाई** – इसकी माप कमर के हिस्से की तरफ से पिछले हिस्से तक ग्लुटास के सबसे

महत्वपूर्ण भाग तक ली जाती है।

- **आधे नितंब के चारों ओर की उंचाई** –इसकी माप लेने के लिए पहले वाले नितंब के दाएं हिस्से के आधे भाग की उंचाई से, नितंब के चारों ओर की माप ली जानी चाहिए।
- **क्राच (जाँघ एवं धड़ के जोड़ का क्षेत्र) की लंबाई** – इसकी माप कमर से बीच में, अगले हिस्से में, नीचे की ओर उस बिंदु तक ली जाती है, जहाँ आपको पैरों के बीच में लाइट दिखाई देता है।
- **पैरों की कुल लंबाई** – इसकी माप फीते से कमर के चारों ओर घुटने तक के हिस्से पर ली जाती है। टेप की माप शरीर के निकट होनी चाहिए, विशेष रूप से नितंब पर।
- **पैर के अंदर की लंबाई** – इसकी माप अगले हिस्से में, पैरों (क्राच) के बीच में से लेकर, पैर के अंदर और टखने के नीचे ओर ली जाती है।
- **पैर के चारों ओर** – इसकी माप पैर के बीच में, सबसे मोटे हिस्से पर और इसके चारों ओर ली जाती है।
- **घुटने की लंबाई** – इसकी माप फीते से कमर के चारों ओर घुटने तक के निचले हिस्से पर टेप की माप शरीर के निकट रखते हुए, विशेष रूप से नितंब पर रखते हुए, ली जाती है।
- **कुल लंबाई** – व्यक्ति को अवश्य ही बिना जूते के होना चाहिए। इसे सिर के सबसे ऊँचे हिस्से से लेकर फर्श तक ली जानी चाहिए। हम यह चाहते करते है कि यह माप लेते समय व्यक्ति को दीवार के निकट खड़ा होना चाहिए।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक प्रदर्शन करते हुए समझाएंगे कि कपड़ों की सिलाई करने से पहले ग्राहक के विभिन्न अंगों की सटीक माप कैसे लें।
- प्रतिभागिओं ने एक–दूसरे पर मापने की तकनीक का अभ्यास करेंगे एवं नोटबुक में माप को नोट करेंगे
- प्रशिक्षक एक दूसरे को मापने के दौरान प्रतिभागी का मार्गदर्शन करेंगे।

सत्र 9

फैब्रिक कटिंग के बारे में सिखना

प्रशिक्षक प्रतिभागिओं को सिलाई करने से पहले फैब्रिक के अलग–अलग हिस्से को काटने के कुछ मूल तकनिकों को प्रदर्शन करते हुए समझाएंगे। सामूहिक रूप से फैब्रिक कटिंग अभ्यास करने के लिए नीचे कुछ टीप्स दिए गये हैं:

लेआउट बनाने से पहले फैब्रिक पेपर पैटर्न तैयार करें

पैटर्न्स अक्सर विशाल आकार के पेपर पर आता है, जिसे विभिन्न टुकड़ों में विभाजित करने की आवश्यकता होती है। पेपर कैंची का इस्तेमाल कर प्रत्येक टुकडें को किनारे से काटें। फैब्रिक को काटने की अनेक विधियां हैं – आप किस विकल्प का चयन करते है इसके अनुसार – आप पैटर्न को मोटे तौर पर या सही तरीके से काट सकते हैं। अभी के लिए, प्रत्येक टुकड़े के चारों ओर थोड़ा अतिरिक्त स्थान छोड़ते हुए काटना एक बेहतर विकल्प है।

अपने पैटर्न पर प्रेस करें यदि यह मुड़ा हुआ या सिकुड़ा हुआ है, ताकि सही व सटीक तरीके से काटना

संभव हो सके। अधिकांश पैटर्न पेपर एक कम गर्म, सूखा आयरन करने पर उचित बना रहता है – हालांकि आयरन परीक्षण एक छोटे से कोरे टुकड़े पर करें क्योंकि कुछ पैटर्न पर दाग–धब्बा पड़ सकता है।

जहां कही संभव हो, आप फ्रीजर पेपर पैटर्न्स को ट्रेस कर सकते हैं। इसका कारण यह है कि अधिकांश पैटर्न्स अनेक आकार में उपलब्ध हैं। ओरिजिनल पैटर्न को बिना काटे हुए, आपको अपने लिए जरूरी आकार के पैटर्न को ही ट्रेस करना व काटना चाहिए।

फैब्रिक का लेआउट एवं कटिंग

सुनिश्चित करें कि आपके पास कार्य करने के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध है। एक बड़े आकार का टेबल इसके लिए उपयुक्त रहेगा, क्योंकि इसकी उंचाई आपकी पीठ को सहारा देने के लिए पर्याप्त होती है (विशेष रूप से एक सिलाई की टेबल, जो एक सामान्य टेबल के मुकाबले अधिक ऊंचा होती है)। फर्श पर रखकर काटने से आपकी पीठ तथा पैर की मांसपेशियों में दर्द हो सकता है। यदि आपके पास टेबल नहीं है, तो आप फर्श के लिए एक विशाल आकार के फोल्ड–आउट कटिंग मैट का इस्तेमाल कर सकते हैं।

- सभी सामग्रियों को एकत्र करें जिसकी आवश्यकता आपको हो सकती है: पैटर्न पीस, पैटर्न के लिए दिशानिर्देश (लेआउट के लिए दिशानिर्देश), पिन, कैंची और फैब्रिक एवं उनको मेज या कटिंग मैट पर रखें।
- लेआउट के दिशानिर्देश के अनुसार अपने फैब्रिक को फोल्ड़ करें।
- अपने पैटर्न टुकड़े को सही दिशा में रखें।
- फैब्रिक की मार्किंग करने के लिए रंगीन चॉक का इस्तेमाल करें।
- फैब्रिक टुकड़े की कटिंग करने के लिए कैंची का इस्तेमाल करें।

क्लिपिंग और नोचिंग कर्व्स

क्लिपिंग

नोचिंग

क्लिपिंग – एक सीम अलाउंस की क्लिप्पिंग करने का तात्पर्य है, फैब्रिक के किनारे के लंबवत अनेक छोटे–छोटे कट करना। जब आपके पास एक कान्केव कर्व या इंटीरियर कार्नर होता है, जिसे जो दाएं किनारे से बाहर निकालने की जरूरत होती है, तब आपको सीम अलाउंस के तनाव को मुक्त

करने के लिए क्लिप की आवश्यकता हो सकती है। इन स्थितियों में, सीम अलाउंस उस क्षेत्र से छोटा होता है, जिसमें इसे घुमाया जाता है। क्लिप्पिंग का उपयोग अन्य स्थितियों में भी किया जा सकता है, जहां आप सीम अलाउंस का शुरू होना मसहूस करते हैं। उथले कर्व्स की तुलना में टाइटर कर्व्स को अधिक बार लगातार क्लिप्स की आवश्यकता होती है।

नोचिंग – नोचिंग की प्रक्रिया क्लिप्पिंग के समान ही है, परंतु इसमें फैब्रिक से एकल स्निप को लेने के बजाए, आप छोटी मात्रा में फैब्रिक को काटते हैं। नोचिंग का उपयोग कॉन्वेक्स कर्व्स और एक्सटीरियर कार्नर पर किया जाता है क्योंकि सीम का अलाउंस उसके घुमाने वाले स्थान से बड़ा होता है। चूंकि नोटचिंग अल्प मात्रा में फैब्रिक को हटा देता है, यह तैयार उत्पादों में भारीपन को कम कर देता है। सीम अलाउंस को संपूर्ण कार्नर में डायगोनली (आड़ा) काटते हुए कार्नर को नौच या कट का निशान लगाया जाता है। कभी–कभी मेन स्टिचिंग लाइन के निकट सीम अलाउंस के अंदर स्टिच की अतिरिक्त छोटी पंक्तियों सिलाई जाती है। यह नोचिंग से पहले कार्नर को मजबूत करने में मदद करेगा। कर्व्स को अंग्रेजी के "वी" ("V") आकार के सीरिज के कट्स को नौच करने के लिए किया जाता है।

सीम अलाउंस की क्लिपिंग और नोचिंग करने से फैब्रिक घुमाव बन जाता है। ऐसा करने से तैयार गारमेंट, सुंदर सपाट सीम और किनारों के साथ समतल हो जाता है।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक विभिन्न कपड़े काटने की तकनीकों के बारे में प्रदर्शित करते हुए समझाएंगे।

सत्र 10

आकार बनाने (शेपिंग) के तकनीक के बारे में सिखना

सिलाई टक्स

सिलाई में, टक्स किसी कपड़े में एक फोल्ड या चुत्रट होती है, जिसे उसके स्थान पर सिला जाता है। छोटे टक्स, विशेष तौर पर बहुत से समानान्तर टक्स, का प्रयोग कपड़ों अथवा घरेलू लिनेन की सजावट के लिए किया जा सकता है। अतिरिक्त कपड़े को सिलने तथा प्रेस करके फोल्ड का निर्माण करने के द्वारा टक बनता है।

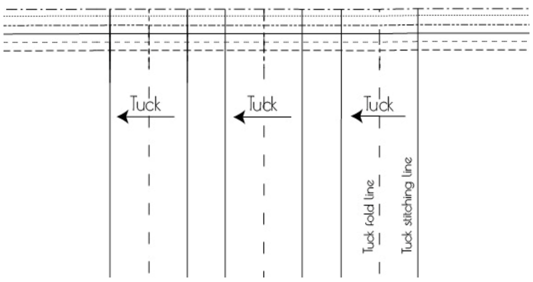

प्रत्येक टक के बीच (''फोल्ड लाइन'') पर मोड़ें, कपड़े के पिछले साइडों को एकसाथ लाएं। फोल्ड पर प्रेस करें। (यदि आपका कपड़ा चिकना फिसलन वाला है, तो आप सिलाई करने से पहले फोल्ड्स को साफ तरीके से प्रेस करने के लिए एक कार्ड का प्रयोग कर सकते हैं।) सीधे स्टिचिंग लाइन पर पिन करें।

टक्स विभिन्न प्रकार की होती हैं, जैसे कि वेब टक, फोल्ड टक, प्रेस टक, स्पेस टक, पिन टक आदि। टक्स जब बहुत पतले होते हैं, तो उन्हें पिन टक्स या पिन टकिंग कहा जाता है। स्पेस्ड टक्स में कपड़े नियमित दूरी पर सिले जाते हैं, इससे वस्त्र में टेक्स्चर एवं आकर्षण बढ़ता है। उन्हें समूहों में तथा टक की पूरी लम्बाई तक नीचे सिलें, अथवा उन्हें एक सिरे पर खुला छोड़ दें। किसी कुरती या जोड पर लंबवत प्रयोग करें अथवा किसी स्कर्ट के नीचे के आसपास क्षैतिज रूप से प्रयोग करें।

डार्ट की सिलाई

यह सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाली शेपिंग तकनीक है। डार्ट का सबसे अधिक उपयोग आपके शरीर के चारों ओर प्रमुखता से किया जाता है, जो बॉर्डर एरिया होता है या अन्य क्षेत्रों से बड़ा होता है, जैसे नितंब, कंधा और महिलाओं के लिए धड़ या वक्षस्थल। एक डार्ट की सिलाई करने का मतलब है, एक त्रिभुज आकार में मोड़ना और अलग करना ताकि फैब्रिक के एक सपाट टुकड़े को 3–डी आकार प्रदान किया जा सके। डार्ट सीधा त्रिभुजाकार या थोड़ा मुड़ा हुआ एकल या दो–सिरों वाला हो सकता है।

उदाहरण के लिए, पुरूषों के फिट शर्ट के पीठ के केंद्र में अधिक मात्रा में डार्ट का उपयोग किया जा सकता है। उन्हें कंधे के पिछले हिस्से पर रखा जा सकता है, जो शर्ट को सोल्डर ब्लेड पर ढीला होने में मदद करता है, परन्तु शोल्डर सीम के उपरी हिस्से में संकरा हो सकता है। उन्हें किनारे या धड़ की रेखा के नीचे भी रखा जा सकता है, जैसा की दाई और के चित्र में दिखाया गया है। स्कर्ट के उपरी भाग में डार्ट होता है जो नितंबों पर स्कर्ट को सही रूप से फिट बनाते है, परन्तु यह कमर पर संकरा होता है। डार्ट अक्सर एक वस्त्र के किनारे वाले सीम पर शुरू होता है और धड़ के शिखर पर समाप्त होता है ताकि वस्त्र के बोडिस (चोली) को अधिक फिटिंग युक्त बनाया जा सके।

प्लीट्ः

एक प्लीट का निर्माण फैब्रिक की दो परतों का`एक दूसरे से दूर मोड़ कर सिलाई किया जाता है। एक वस्त्र का निर्माण करते समय, आपको इसमें "पूर्णता" या "बॉडी" को जोड़ने की आवश्यकता हो सकती है या इसको पहनने में आसान या बेहतर दिखाने की भी जरूरत हो सकती है। उदाहरण के लिए, एक स्कर्ट या घाघरे में, आप ध्यान देंगे कि हेम और कमर के अल्प व्यास वाला होने के बावजूद स्कर्ट के बाकी स्थान में घूमने–चलने के लिए पर्याप्त स्थान रहता है। इस प्रकार का आकार मुख्य

रूप से कमर पर "प्लीट" को जोड़ते हुए किया जाता है। इस खंड में, हम इस प्रकार के उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले सबसे सामान्य प्रकार के तकनीकों के बारे में सीखेंगे। प्लीट फैब्रिक में एक फोल्ड है, जहां फैब्रिक स्वयं को दुगुना करता है और सही स्थान पर सिलाई करता है। प्लीट लड़कियों के परिधान में बेहतर अलंकार का निर्माण करता है। कपड़े को मोड़ने और गुना के समानांतर कुछ दूरी पर एक सीधी रेखा को सिलाई करके एक प्लीट बनाई जाती है।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक विभिन्न आकार बनाने (शेपिंग) तकनीकों के बारे में प्रदर्शित करेंगे।

चौथा दिन

सत्र 11:

क्रॉस लिस्ट को देखना और उसका विश्लेषण करना

- प्रत्येक प्रतिभागी क्रॉस लिस्ट को देखेंगे और प्रशिक्षण की प्रगति के बारे में चर्चा करेंगे।

वस्त्र में पॉकेट को जोड़ने के तरीके सीखना

प्रशिक्षक इस अध्याय में, सिलाई किए जाने वाले वस्त्र में पॉकेट लगाने की तकनीकों के बारे में प्रदर्शित करते हुए समझाएंगे।

वस्त्र में पॉकेट लगाने के कई अलग–अलग तरीके हैं, जेसे कि साइड सीम पॉकेट (स्कर्ट या ड्रेस की साइड सीम में पॉकेट सीना), तथा फ्रंट पॉकेट (जैसे कि शर्ट पर)।

मूल रूप से एक पॉकेट में एक अग्र एवं एक पार्श्व भाग (इनसाइड) होता है। यदि शर्ट के अग्र भाग में एक पॉकेट लगाई जाती है, तो शर्ट का अग्र भाग पॉकेट के अन्दर (अथवा पीछे) होता है। पॉकेट यदि स्कर्ट के साइट सीम में सिली जाती है, तो स्कर्ट का अग्रभाग पॉकेट के अग्रभाग की भूमिका निभाता है तथा एक पॉकेट सिलने के द्वारा एक पार्श्व भाग का निर्माण किया जाता है।

पॉकेट के ऊपरी किनारे को प्रायः एक फेसिंग एवं इन्टरफेसिंग जोड़ने के द्वारा अधिक मजबूत बनाया जाता है। पॉकेट यदि शर्ट के अग्रभाग या पैन्ट के पार्श्व भाग में होता है तो यह महत्वपूर्ण होता है, उदाहरण के लिए एक पॉकेट को लाइन भी किया जा सकता है, जो इसे एक अच्छी फिनिश प्रदान करता है।

किसी वस्त्र में पॉकेट उपयोगी और सजावटी दोनों ही हो सकते हैं। कुछ छिपे होते हैं, कुछ दिखाई पड़ते हैं। यहां पर पॉकेट की सबसे अधिक प्रचलित स्टाइल तथा उनकी संक्षिप्त परिभाषा वेबस्टर डिक्शनरी द्वारा दी गई है। आप डिजाइन में कोई संशोधन करने के लिए इसमें से किसी का चयन कर सकते हैं।

वस्त्रों में प्रयोग की जाने वाली अलग–अलग प्रकार की पॉकेट

ग्युसेट पॉकेट

इनसेट पॉकेट

वेल्ट पॉकेट

सीम पॉकेट

फ्लैप पॉकेट

ब्रॉड वेल्ड साइड पॉकेट

पैच पॉकेट

- **वेल्ट पॉकेट –** ऐसे पॉकेट, जिनका मुख सुसज्जित होती है तथा एक या दो पतली स्ट्रिप लगी होती हैं।
- **पैच पॉकेट** – विभिन्न आकृतियों एवं साइज वाले पॉकेट, जो वस्त्र की बाहरी सतह पर सिले हुए मैटीरियल से बनी होती है।
- **फ्लैप पॉकेट** – ये ऐसे पॉकेट होते हैं, जिनका मुख, उसके शीर्ष से लटकने वाले एक कपड़े से ढका होता है।
- **ग्युसेट पॉकेट** – ये पैच पॉकेट होते हैं, जिन्हें एक एक्सपैन्डेबेल बॉटम तथा साइड्स अथव पॉकेट के बीच में एक इन्वर्टेड या गोल प्लीट द्वारा बड़ा बनाया जाता है।
- **ब्रॉड वेल्ड साइड पॉकेट** – एंगेल्ड पॉकेट, इसमें मुख के बाहरी किनारे पर एक चौड़ी झालर होती है।
- **सीम पॉकेट** – ये पॉकेट, वस्त्र के एक साइड सीम में एक ओपनिंग में होती हैं।
- **इनसेट पॉकेट** – ऐसी पॉकेट जिसके मुख पर एक सजावटी सीम होती है, जो वस्त्र को एक विशेष लाइन प्रदान करती है।
- **हैन्ड वार्मर पाउच** – किसी वस्त्र के अग्र भाग पर पैच पॉकेट, यह ठंडी से हाथों की सुरक्षा करने के लिए एक या दोनों साइड से लंबरूप से खुलता है।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक वस्त्रों को जेब संलग्न करने के बारे में प्रदर्शित करेंगे।
- प्रतिभागी जेब संलग्न करने का अभ्यास करेंगे।

सत्र 12:
आस्तीन जोड़ने के बारे में सीखना

प्रशिक्षक इस अध्याय में प्रदर्शित करते हुए समझाएंगे कि, एक आर्महोल में एक आस्तीन कैसे लगाएं। वस्त्र के कंधे में आस्तीन ऐसे बनाएं कि यह सुंदर लगे और पहननेवाले को फैब्रिक को अपने कंधे के ऊपर वक्र करने में सहायता मिले। आस्तीन का ऊपरी हिस्सा आमतौर पर ब्लाउज के आर्महोल से 2 सेमी बड़ा होता है। इस अतिरिक्त फैब्रिक को इस प्रकार जुटाया जाता है कि एकसाथ सिले जाने पर आस्तीन के ऊपरी भाग तथा आर्महोल की परिधि एकसमान होती है, तथा आपके कंधे को समायोजित करने के लिए फैब्रिक को फैलाव देता है।

कुछ स्लीव हेड में बिलकुल भी आसानी नहीं होती है। शर्ट बनाने में तथा जर्सी टी–शर्ट में प्रयोग की जाने वाली एक वैकल्पिक पद्धति के रूप में प्रायः ''फ्लैट पर'' स्लीव इंसर्ट की जाती है, दूसरे शब्दों में कहें तो बॉडिस साइड सीम तथा स्लीव अन्डरआर्म स्लीव को जोड़ने से पहले इनकी आर्महोल के सामने फ्लैट सिलाई की जाती है।

किसी वस्त्र में आस्तीन से स्टाइल और सौन्दर्य बढ़ना चाहिए तथा साथ ही पहनने वाले व्यक्ति को आराम भी मिलना चाहिए। सिलाई के मूलभूल सिद्धांतों को समझने के द्वारा आप अच्छी फिटिंग वाली आस्तीन बना सकते हैं। चार मुख्य प्रकार की आस्तीनें और उनके विवधिता निम्नलिखित हैं:

- **सेट–इन स्लीव** – इन्हें बॉडिस ऑर्महोल में सिला जाता है। इसे 'सेट इन' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि वस्त्र के कंधे तथा साइड सीम पहले ही एकसाथ सिले जाते हैं तथा सभी सिलाई प्रेस्ड ओपेन और फिनिश्डि होती हैं। सभी सेट–इन प्रकार की आस्तीनों को इज्ड, गेदर्ड, डार्टेड या टक्ड तथा बॉडिस आर्म्सकी सीम में सिला जाना आवश्यक होता है। उन्हें फिट या फ्लेयर किया जाता है, किसी भी लम्बाई तक काटा जा सकता है, तथा उनकी हेमलाइन को विभिन्न तरीकों से फिनिश किया जाता है। सेट–इन स्लीव के भिन्न प्रकार हैं:

1. **क्लासिक** – क्लासिक स्लीव वह स्लीव होती है, जो अधिकांश पारम्परिक सिलाई, फिटेड स्टाइल में पायी जाती है। क्लासिक स्लीव की विशेषता के रूप में इसमें एक हाई स्लीव कैप होता है। हायर स्लीव कैप अधिक औपचारिक एवं आकर्षक होता है, विशेष तौर पर जबकि गति एक प्राथमिकता नहीं होती है।

2. **टी–शर्ट** – टी–शर्ट आस्तीन एक बहुत ही अनौपचारिक स्टाइल होती है। बॉडिस आर्मसाई पर शोल्डर प्वाइंट को आमतौर पर कंधे से एक इंच (2.5 सेमी) से अधिक नीचे लाया जाता है, तथा आर्महोल में बहुत ही छिछला मोड़ होता है। इसके परिणामस्वरूप 'आर्म की' पर तिरछा सिलवट निर्मित होगा। वैसे इसे स्टाइल से गति की अधिक आजादी भी सम्भव है।

3. **कैजुअल** – छोटा कैप स्लीव को एक थोड़ा सा ड्रॉप्ड गारमेन्ट शोल्डर–लाइन के लिए डिजाइन किया जाता है। इसमें स्लीव कैप से नोच के बीच में लगभग 0.75 से लेकर 1 इंच तक स्थान होता है। कम फिट होने के कारण यह आस्तीन, क्लासिक अथवा रेगुलेशन सेट–इन स्लीव से अधिक गति प्रदान करती है।

- **रगलान** – रगलान स्लीव को अक्सर इसकी आरामदायक फिट तथा सापेक्षिक रूप से आसान रचना के लिए चुना जाता है। इसे सीधा अथवा बायस ग्रेन में अथवा एक या दो टुकड़ों में काटा जा सकता है। इसकी आस्तीन चूंकि नेकलाइन एरिया अथवा गारमेन्ट बॉडिस के किसी दूसरे भाग में जाती है, इसलिए शोल्डर कर्व के ऊपर शेपिंग की आवश्यकता होती है। शेपिंग एक डार्ट, एक सीम अथवा गेदर्स का रूप ले सकती है। यह एक या दो पीस स्लीव हो सकती है।

- **किमोनो** – किमोनो स्लीव वास्तव में बॉडिस अथवा मुख्य गारमेन्ट की बॉडी का एक विस्तार ही है, तथा कभी–कभी इसे सरलता की प्रतिमूर्ति कही जाती है। आस्तीन को वस्त्र के साथ एक टुकड़ा के रूप में काटा जाता है, इस प्रकार एक टी–शेप बॉडिस निर्मित होती है। इस वस्त्र को पहने जाने पर भुजाएं समकोण पर नहीं होती हैं, इसलिए आस्तीन के कारण बांह एवं कमीज़ का कँधा क्षेत्र में मोड़ निर्मित होती हैं। जब स्लीव/आर्महोल क्षेत्र बहुत बड़ा होता है अथवा अधिक खुली संरचना का होता है, तो एक बहुत ही खूबसूरत सजावट मिल सकता है।

- **डोलमन** – एक पूरी आस्तीन जो आर्महोल पर बहुत चौड़ी है, तथा कलाई पर पतली है। डोलमैन स्लीव बहुत ही लो आर्मसाई में सेट की हुई स्लीव होती है, वास्तव में आर्मसाई कमर तक विस्तारित हो सकता है, और ऐसे में ब्लाउज के बाहु के नीचे कोई सीम नहीं होगी।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक वस्त्रों आस्तीन जोड़ने के बारे में प्रदर्शित करेंगे।
- प्रतिभागी आस्तीन जोड़ने का अभ्यास करेंगे।

सत्र 13:
सीम जोड़ने के तकनिक के बारे में सीखना

प्रशिक्षक इस अध्याय में प्रदर्शित करते हुए बस्त्र पर सीम जोड़ने के तकनिक के बारे में समझाएंगे । सिलाई में, सीम एक जोड़ होता है, जहां पर कपड़े, लेदर अथवा अन्य समग्रियों की दो या अधिक परत को स्टिच द्वारा एकसाथ जोड़ा जाता है। सिलाई मशीन का अविष्कार किए जाने से पहले सभी सिलाईयां हाथ से की जाती थीं।

वस्त्र विन्यास में सीम को तैयार वस्त्र में उनके प्रकार तथा उनकी जगह के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है (सेन्टर बैक सीम, इनसीम, साइड सीम)। सीम को विभिन्न प्रकार की तकनीकों से फिनिश किया जाता है, ताकि कपड़े के कच्चे किनारे उधड़ने ना पाएं, तथा वस्त्रों के अन्दर का भाग साफसुथरा रहे। सीम फिनिशिंग के कई तरिकें हैं जैसे किः

- **पिंकिंग शियर्स अथवा जिग–जैग किनारे वाला तरीकाः** आपको कपड़े पर एक जिग जैग किनारा काटने के लिए एक पिंकिंग शियर्स की आवश्यकता होगी। कतरनी की सहायता से किनारों के निकट काटें। इससे एक पक्का

रूप मिलता है और उधड़ने की रोकथाम में सहायता मिलती है। उधड़ने से अधिक सुरक्षा के लिए पिंक किया हुआ किनारे के अन्दर एक लाइन स्टिच करना एक अच्छा तरीका हो सकता है।

- **जिग–जैग स्टिच तरीकाः** अपनी मशीन पर जिग जैग सेटिंग का प्रयोग करें। पहले किसी पुराने कपड़े पर आजमाएं – हल्के कपड़ों के लिए पहले एक छोटी स्टिच आजमाएं, तथा भारी कपड़ों पर लम्बी स्टिच आजमाएं। आप सीम एलाउन्स के दोनों तरफ या तो जिग जैग कर सकते हैं और सीम ओपेन को प्रेस कर सकते हैं (छोटी फोटो देखें), अथवा आप दोनों साइड को एकसाथ जिग जैग कर सकते हैं और एक साइट प्रेस कर सकते हैं। कपड़े के किनो पर पर मशीन द्वारा सिली गई जिग जैग स्टिच, उधड़ने की रोकथाम करती है। जिग–जैगको किनारे के निकट सिला जाना चाहिए, जिससे बाहरी जिग–जैग कपड़े के किनारे पर आए।

- **क्लीन फिनिश्ड सीम तरीकाः** इसे कौन से कपड़ों पर प्रयोग करना चाहिएः हल्के से मध्यम भार वाले बुना हुआ कपड़ों पर। भारी कपड़ों के लिए बहुत अधिक बड़ा हो सकता है। दाएं साइड को एकसाथ करके अपनी सीम को सिलें और प्रेस ओपेन करें। सीम एलाउन्स के प्रत्येक साइड के लिए, 0.25 इंच को कम हिस्से को अन्दर की तरफ मोडें और प्रेस करें। सीम एलाउन्स के किनारे के निकट सिलाई करें, वस्त्र को ना सिलें।

- **बाइंडिंग सीम तरीकाः** इसे कौन से कपड़ों पर प्रयोग करना चाहिएः इसे नाजुक या हल्के कपड़ों पर भी प्रयोग किया जा सकता हैं। यह बहुत भारी मोटा सूती कपड़ा या अन्य भारी कपड़े के लिए भी उपयोगी है। बाइंडिंग को सीम एलाउन्स में ठीक उसी तरह से स्टिच किया जाता है, जैसे इसे क्विल्ट या प्लेसमैट पर स्टिच किया जाता है।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक प्रदर्शित करते हुए बस्त्र पर सीम जोड़ने के तकनिक के बारे में समझाएंगे।
- प्रतिभागी सीम जोड़ने के तकनिक का अभ्यास करेंगे।

सत्र 14:
ज़िपर/ज़िप लगाना सीखना

यहां प्रशिक्षक कपड़ों में विभिन्न प्रकार के ज़िपर जोड़ने के कुछ मूल तरीके प्रदर्शन करते हुए समझाएंगे।

ज़िपर एक आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली डिवाइस होती है जिससे किसी कपड़े या अन्य लचीली सामग्री जैसे कपड़ा या बैग के खुले किनारों को बांधने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है।

ज़िपर/ज़िप के बल्क में फैलाने वाले दांतों की दो पंक्तियां होती हैं। इन दांतों से दोनों पक्तियों को फंसाया जाता है। ये दांत विशेष आकार की धातु

या प्लास्टिक के बने होते हैं और इनकी संख्या दस से लेकर सैकड़ो तक होती है। ये दांत या तो अकेले होते हैं या सतत कुंडली से इन्हें आकार दिया जाता है। हाथ से संचालित होने वाला स्लाइडर, दांत की पंक्तियों में आगे–पीछे खिसकता है। स्लाइडर के भीतर एक वाई (Y) आकार का चैनल होता है, जो दांतों की विरोधी पंक्तियों को निर्देशानुसार मिलाता या अलग करता है।

इन ज़िप का इस्तेमाल मुख्यतौर से महिलाओं के परिधानों या स्कर्ट में किया जाता है। आज इसने हर तरह के कपड़ों को बांधने का आधुनिक रूप ले लिया है जैसे पतलून, जैकेट, जीन्स, स्कर्ट आदि। ये ज़िपर बुने हुए टेप में उपलब्ध हैं।

ज़िपर विभिन्न प्रकार के रंग तथा आकार में आती हैं। इन्हें अधिकांशतौर पर धातु या प्लास्टिक में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो इस बात पर भी निर्भर करता है कि इन्हें बनाने के लिए किस प्रकार की सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है। इसके अतिरिक्त, एक विशेष प्रकार की प्लास्टिक ज़िपर भी होती है जिसे इंविजिबल (अदृश्य) ज़िपर कहा जाता है। इन ज़िपर में फ्लाई के प्रावधान की जरूरत नहीं होती है, क्योंकि इन्हें इस प्रकार बनाया तथा टांका जाता है कि बाहर से केवल हेयरलाइन सीम ही दिखलाई पड़ती है।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक प्रदर्शित करते हुए बस्त्र पर ज़िपर जोड़ने के तकनिक के बारे में समझाएंगे।
- प्रतिभागी ज़िपर जोड़ने के तकनिक का अभ्यास करेंगे।

पॉचवा दिन

सत्र 15:

क्रॉस लिस्ट को देखना और उसका विश्लेषण करना

- प्रत्येक प्रतिभागी क्रॉस लिस्ट को देखेंगे और प्रशिक्षण की प्रगति के बारे में चर्चा करेंगे।

डिजाइनिंग इनपुटः नई फैशनेबल डिजाइन

फैशन लोगों के बीच एक बदलते हुए चलन है। एक दर्जी के रूप में प्रतिभागियों को लगातार इस बदलते स्वाद और कपड़ों के बारे में लोगों की वरीयताओं से खुद को अपडेट रखना पड़ता है। प्रतिभागियों को अपने ग्राहकों की मांग को पूरा करने के लिए लगातार नए कौशल सीखने और विकसित करने होंगे। नवीनतम फैशन ट्रेंड के बारे में अच्छी जानकारी होने पर, प्रतिभागी न केवल अपने ग्राहक की पसंद के अनुसार कपड़े सिलते हैं, बल्कि वे ऐसे कपड़े भी सुझा सकते हैं और

डिजाइन कर सकते हैं, जिन्हें वे सीधे अपने ग्राहकों को बेच सकें। वे अपने स्वयं के रचनात्मक विचारों का उपयोग अपने ग्राहकों के लिए नए डिजाइन किए कपड़े बनाने के लिए कर सकते हैं। वे भी सहज महसूस कर सकते हैं जब ग्राहक उन्हें कुछ डिजाइन प्रदान करेंगे और समान कपड़े बनाने के लिए कहेंगे। स्थानीय ग्राहकों के बीच नवीनतम फैशन प्रवृत्ति के बारे में खुद को अपडेट रखने के लिए विभिन्न स्रोत हैं :

- अपने इलाके के लोगों के पोषाकों को देखना और समझना
- ग्राहकों के साथ उनकी पसंद के बारे में बात करना
- रेडीमेड कपड़ों की दुकानों का दौरा करना, दुकानदारों के साथ बात करना और विभिन्न पोशाक के पैटर्न का अवलोकन करना।
- युट्युव जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जाकर।

यहाँ कुर्ती और ब्लाउज के विभिन्न पैटर्न के कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

कुर्ती के विभिन्न डिजाइन

Image credit: https://www.looksgud.in/blog/different-types-of-kurti-designs/

ब्लाउज के विभिन्न डिजाइन

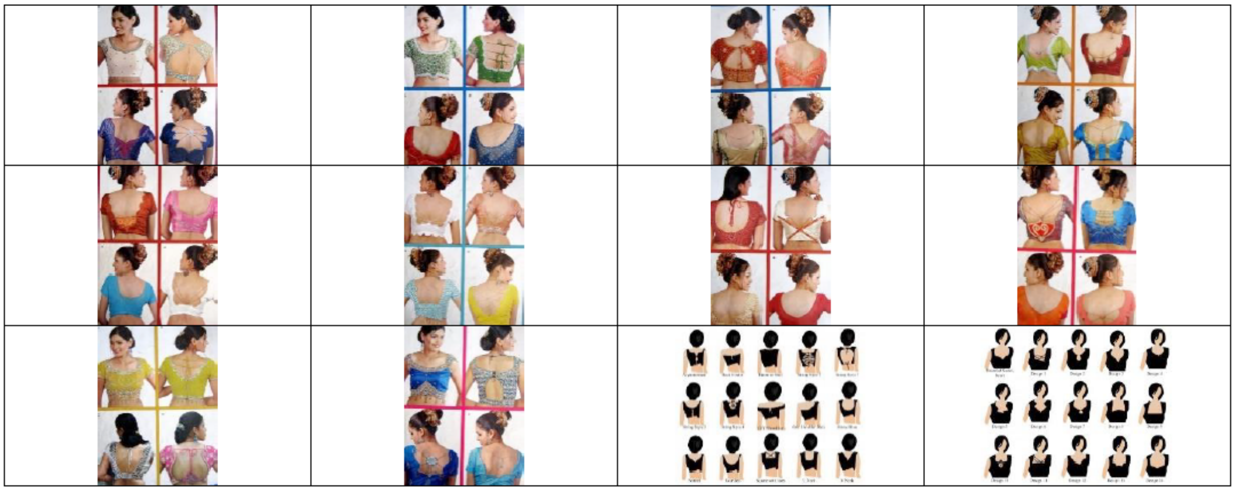

गतिविधिः मैं नए डिजाइन सीखूंगी

- प्रशिक्षक बदलते फैशन ट्रेंड के साथ पैटर्न ज्ञान को अपडेट करने की आवश्यकता के बारे में बताएंगे।
- प्रशिक्षक पुरुषों और महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न परिधानों में कुछ नवीनतम प्रवृत्ति का उदाहरण देंगे।
- प्रतिभागी जोड़े में और व्यक्तिगत रूप से समूह में चर्चा करेंगे कि वे किस तरह से इलाके में लगातार बदलते फैशन के बारे में खुद को अपडेट रखेंगे।

सत्र 16:
अपने व्यवसाय का वित्तपोषण

प्रतिभागी इनमें से कई छोटे सिलाई के दुकान चलाने के लिए एवं अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए धन की समस्या आती है। सिलाई के व्यवसाय को सुरक्षित और टिकाऊ बनाने के लिए एक औपचारिक सेटअप के साथ व्यावसायिक गतिविधियों का विस्तार करने की आवश्यकता होती है जो वित्त की पहुँच को बढ़ाती है। व्यवसाय का औपचारिकरण का अर्थ व्यवसाय की प्राधिकरणों में प्रक्रिया या पंजीकरण और लाइसेंसिंग है, जो व्यवसाय के मालिक और उसके कर्मचारियों के लिए सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच प्रदान करता है। औपचारिकरण व्यापार को कानूनी ढांचे के अनुरूप बनाता है, जिसमें कर, सामाजिक सुरक्षा और श्रम कानून शामिल हैं।

यहाँ वित्त के कुछ सुझाए गए स्रोत दिए गए हैं जहाँ वे अपने कारोबार का विस्तार करने के लिए धन प्राप्त कर सकते हैं।

- **बैंक :** छोटे व्यवसायों को ऋण प्रदान करने के लिए बैंकों की विशेष योजनाएँ हैं। बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए व्यवसाय को बैंक के न्यूनतम मानदंडों को पूरा करना पड़ता है। प्रत्येक बैंक का व्यवसाय से आय की संभावना, वार्षिक टर्नओवर इत्यादि के संबंध में अपने स्वयं के मानदंड होते हैं। कई प्रकार के ऋण हैं जो बैंक कार्यशील पूंजी ऋण के रूप में प्रदान करते हैं (वह ऋण जो व्यवसाय के रोजमर्रा के कार्यों के लिए लिया जाता है जैसे कर्मचारियों का वेतन, किराया आदि, संपत्ति पर ऋण, आदि)। अपना सिलाई के व्यवसाय चलाने वाला व्यक्ति बैंक द्वारा दिए गए ऋणों के बारे में अधिक जानने के लिए अपनी निकटतम बैंक शाखाओं से संपर्क कर सकते हैं और अपनी

आवश्यकता के अनुसार ऋण का प्रकार चुन सकते हैं।

- **माइक्रोफाइनेंस (सूक्ष्म वित्त संस्थान) :** सिलाई के व्यवसाय चलाने वाला व्यक्ति अपने मौजूदा सिलाई की दुकान शुरू करने या अपग्रेड करने के लिए संयुक्त देयता समूह (जेएलजी) या स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) का गठन करके माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं से ऋण ले सकते हैं।
- **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना :** सिलाई के व्यवसाय चलाने वाला व्यक्ति माइक्रो क्रेडिट योजना के तहत मुद्रा ऋण का लाभ उठा सकते हैं, जो मुख्य रूप से सूक्ष्म वित्त संस्थानों के माध्यम से दिया जाता है, जो विभिन्न सूक्ष्म उद्यम/लघु व्यवसायिक कार्यों के लिए एक लाख तक का ऋण देते हैं। यद्यपि ऋण का वितरण एसएचजी/जेएलजी/व्यक्तियों के माध्यम से किया जा सकता है, ऋण एमएफआई द्वारा व्यक्तिगत उद्यमियों को विशिष्ट आय पैदा करने वाले सूक्ष्म उद्यम/लघु व्यवसायिक कार्यों के लिए दिया जाता है।

अपनी दुकान के लिए बेहतर सिलाई मशीनों की खरीद कैसे करें

सिलाई की दुकान की दैनिक उत्पादकता के लिए बेहतर गुणवत्ता और ज्यादा काम कर सकने वाली सिलाई मशीनें महत्वपूर्ण हैं। भारत के सभी कस्बों या शहरों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार और प्रतिष्ठित ब्रांड जैसे ऊषा, सिंगर, ब्रदर, जूकी आदि से विभिन्न मॉडल की सिलाई मशीनें उपलब्ध हैं। आप अपनी जरूरत और बजट को देखते हुए अपनी सिलाई मशीन चुन सकते हैं। अपनी दुकान के लिए सिलाई मशीन खरीदते समय विचार करने के लिए कुछ बुनियादी सुझाव दिए गए हैं :

- सिलाई मशीन की कुछ बुनियादी विशेषताओं पर विचार करें जो काम में आसानी और लंबे समय तक चलने में मदद करती है जैसे–
  - अच्छे श्रम दक्षता (एर्गोनॉमिक्स) और नियंत्रण वाला हो
  - हल्के वजन वाला हो
  - अच्छी गति नियंत्रण हो
- अच्छे सिलाई मशीनों के बारे में जानने के लिए और उन्हें कहाँ से खरीदना है, इसके बारे में पास के कुछ विशेषज्ञ दर्जी से परामर्श करें।
- आपको खरीदने के लिए अंतिम आदेश देने से पहले, विभिन्न विक्रेताओं से कीमत की जांच करनी चाहिए।
- आप ई–कॉमर्स साइटों जैसे अमेजॅन, फ्लिपकार्ट आदि से ऑनलाइन ऑर्डर के माध्यम से सिलाई मशीनों की खरीद कर सकते हैं।
- मशीन और उपकरण खरीदते समय उचित बिल और अन्य कागजात लेना न भूलें। यह आपकी परियोजना के उचित दस्तावेजीकरण में सहायक होगा।

गतिविधिः मेरे सिलाई व्यवसाय का वित्तपोषण

- प्रशिक्षक व्यवसाय के वित्तपोषण के विभिन्न स्रोतों के बारे में बताएंगे।
- प्रत्येक प्रतिभागी अपने व्यवसाय को शुरू करने/ विस्तार करने के लिए ऋण के रूप में कितना पैसा चाहते हैं और वे उस ऋण राशि का उपयोग कैसे करेंगे, इसके बारे में एक मोटा अनुमान लगाएंगे।
- उनमें से प्रत्येक प्रतिभागी समूह के लिए अपनी गणना प्रस्तुत करेगा।
- प्रशिक्षक और प्रतिभागी प्रत्येक प्रस्तुति के लिए टिप्पणी करेंगे।

सत्र 17:
विक्री एवं व्यवसाय को अधिकतम करने के लिए रणनीतियाँ

आपने अपने स्थानीय बाजार में देखा होगा कि एक ही उत्पाद के कई विक्रेता होते हैं, लेकिन कुछ अपना सामान कम समय में बहुत कुशलता से बेचते हैं और कुछ को ग्राहकों के दुकान पर आने का इंतजार रहता है। उनमें से कई लोगों के साथ व्यवहार में अनुभवी होते हैं। वे उन सामानों के बारे में जानते हैं जो वे बेच रहे हैं, वे जानते हैं कि उन्हें ग्राहकों के साथ कैसे बात करनी है और जिस तरह से वे व्यवहार करते हैं वह बहुत व्यक्तिगत होता है। अपने अच्छे व्यवहार और कुशल बातचीत के परिणामस्वरूप वे नियमित ग्राहकों की एक अच्छी संख्या बनाते हैं जो व्यवसाय को अच्छी तरह से चलाने में मदद करते हैं। अच्छे व्यवहार और वाक कौशल के अलावा कुछ अन्य कारक हैं जो किसी व्यवसाय में विक्री को प्रभावित करते हैं। इन कारकों को मोटे तौर पर विपणन के 4पी (उत्पाद, मूल्य, स्थान और संवर्धनः(Product, Price, Place and Promotion)) कहा जाता है। इन 4 पी पर काम करके व्यवसाय को अपने ग्राहकों के करीब लाया जा सकता है जो व्यवसाय के उत्पाद की विक्री में सुधार लाने में मदद करता है। आइए यह दोहराएं कि इन 4पी का क्या अर्थ है जो हमने फेस्ट के दौरान सीखा और हम अपने सिलाई व्यवसाय में इस अवधारणा का उपयोग कैसे कर सकते हैं।

उत्पाद : उत्पाद एक वस्तु या सेवा है जो एक व्यवसाय अपने ग्राहकों के लिए लाता है। एक उत्पाद को ग्राहकों की कुछ मांगों को पूरा करना चाहिए या यह ग्राहकों के बीच मांग पैदा करनी चाहिए, ताकि ग्राहकों को लगे कि उन्हें उत्पाद की आवश्यकता है। जैसे विभिन्न प्रकार के सिलाई सेवाओं के साथ बदलते फैशन ट्रेंड युक्त परिधानों की विस्तृत श्रृंखला की उपलब्धता, जिसके लिए उपभोक्ताओं की मांग अत्यधिक है।

मूल्य : उत्पाद के लिए ग्राहक कितना भुगतान करेंगे? इस प्रश्न का उत्तर 4पी के दूसरे पी का वर्णन करता है। उत्पाद का मूल्य निर्धारित करते समय हमें निम्नलिखित पर विचार करने की आवश्यकता होती है :

- वस्तु या सेवा की कीमत कितनी होनी चाहिए?
- किस कीमत में अन्य प्रतियोगी वस्तु को बेच रहे हैं या सेवा प्रदान कर रहे हैं?
- क्या उस इलाके में ग्राहकों का बड़ा हिस्सा उस कीमत का भुगतान करने की क्षमता रखता है?

स्थान : स्थान किसी भी व्यवसाय के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। यदि आप अपने उत्पाद को सीधे अंतिम उपयोगकर्ताओं को बेचनाया सेवा प्रदान करना चाहते हैं, तो आपको ऐसे स्थान का चयन करना होगा जो अत्यधिक दृश्यमान वाले हो और वहां ज्यादा लोगों की पहुंच हो । इसलिए, अपने सिलाई का दुकान लगाने के लिए आवासीय क्षेत्र के पास एक दुकान लेना फायदेमंद होगा। सिलाई का दुकान के मालिक को इन बातों पर विचार करना चाहिए :

- उस स्थान पर लोगों की पहुँच जहाँ दुकान स्थित है
- स्थानीय प्रतियोगियों पर विचार करना जो समान किस्म की दुकान चला रहे हैं
- सिले पोशाक समग्री को इस तरह से प्रदर्शित करना या अलग –अलग किस्मों के फैशन परिधानों को खूबसूरती से एक क्रम में रखना कि ग्राहक आसानी से अपने पसंदीदा सामान तक आसानी से पहुँच सके ।

प्रचार : इसमें उत्पाद का विज्ञापन और प्रभावी संचार कौशल का उपयोग करके लोगों के साथ अच्छे संबंध बनाना शामिल है। यहाँ, विक्रेता को चाहिए कि वह :

- उन लोगों के साथ बात करें जो सेवा लेंगे और बताएं कि अपने दुकान का खासीयत क्या है

और वे आपके दुकान से पोशाक क्यों सिलें।

- ग्राहकों पर पूरा ध्यान दें और उन्हें ध्यान से सुनें।
- नियमित ग्राहक को सेवा कि कीमत में कुछ छूट दें।
- मूल्य निर्धारण को शुरुआत में बहुत उचित तरीके से किया जाना चाहिए ताकि ग्राहकों को आपके व्यवसाय और कपड़ों में रुचि मिल सके। टर्नओवर में वृद्धि के साथ, आप कीमतों को समायोजित कर सकते हैं।
- अपने उत्पाद का प्रचार विज्ञापन बोर्ड और बैनर के माध्यम से अपने इलाके के विभिन्न स्थानों पर करें।
- आप अपनी दुकान में उपलब्ध सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया जैसे व्हाट्सएप, व्हाट्सएप बिजनेस, फेसबुक और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकते हैं। आप ग्राहकों को टेलरिंग सेवाओं के लिए ऑर्डर ऑनलाइन या फोन कॉल के जरिए देने के लिए कह सकते हैं। यहाँ कुछ विशेष और घर पर जाके टेलरिंग सेवा प्रदान करने वाले सेवा प्रदाताओं के वेबलिंक हैं जो प्रतिभागियों को प्रेरणा प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं:

https://www.yourtailor.in/
https://www.facebook.com/urbantailor.in/
http://www.darzioncall.in/
http://www.fabstitch.in/

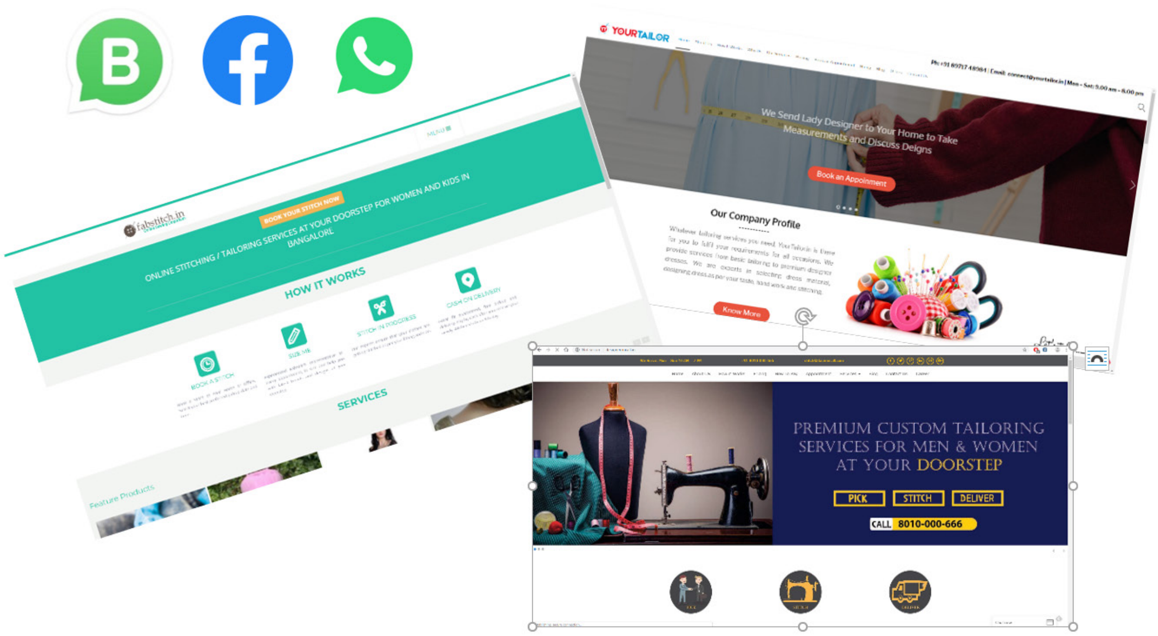

सिलाई दुकान के मालिक (दरजी) के लिए आवश्यक मुख्य सॉफ्ट स्किल्स

सॉफ्ट स्किल एक व्यक्तिगत गुण है जो स्थितिजन्य जागरूकता का समर्थन करता है और व्यक्ति द्वारा कार्य को संपन्न करने की क्षमता बढ़ाता है। इसे अकसर लोगों के कौशल या भावनात्मक बुद्धि मत्ता के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है। तकनीकी कौशल (जिसे हार्ड स्किल भी कहा जाता है) के विपरीत सॉफ्ट स्किल मौटे तौर पर सभी व्यवसायों पर लागू होता है। उदाहरण के लिए सिलाई दुकान के मालिक (दरजी) , जिसे अपने बाजार का व्यापक ज्ञान हो सकता है, उसे थोक विक्रेताओं के साथ एक सौदा तय करना और अपने ग्राहकों को बनाए रखना मुश्किल होगा, यदि उसमें अन्तरव्यैक्तिक कौशल और बातचीत के सॉफ्ट स्किल की कमी है। नीचे कुछ प्रमुख सॉफ्ट स्किल्स

की सूची दी गई है जिनके द्वारा सिलाई दुकान के मालिक (दरजी) अपने व्यवसाय को लाभदायक और टिकाऊ बना सकते हैं।

संवाद : एक सॉफ्ट स्किल के रूप में संवाद केवल कई शब्दांशों या भाषणों के बारे में नहीं है। मौखिक संवाद में सुनना और बोलना दोनों शामिल हैं। सुनना संवाद की प्रक्रिया के दौरान संदेशों को सही ढंग से प्राप्त करने और समझने की क्षमता है। प्रभावी रूप से सुनने के कौशल के अभाव में संदेशों को आसानी से गलत समझा जा सकता है। यह संवाद के टूटने के परिणामस्वरूप होता है और बात करने वाले और सुनने वाले को निराशा या चिढ़ हो सकती है। बात समझना, बात सुनने के समान नहीं है। सुनने का अर्थ ध्वनियों से है, जो सुनी जाती हैं, लेकिन समझने में बोलने वाले के शब्दों, संदर्भों, वह कैसी भाषा और आवाज का उपयोग करता है और उसकी भंगिमा पर ध्यान दिया जाता है। अपने ग्राहक को प्रभावी ढंग से सुनने के लिए :

- बातचीत बंद करें
- बीच में न बोलें
- जो ग्राहक कह रहा है उस पर पूरा ध्यान केन्द्रित करें
- उत्साहजनक शब्दों और भाव भंगिमाओं का उपयोग करें
- ग्राहक के नजरिए के बारे में सोचें
- धैर्य रखें
- उस टोन पर ध्यान दें जिसका उपयोग किया जा रहा है
- ग्राहक के हावभाव, चेहरे के भाव और आँखों के संचलन पर ध्यान दें
- ग्राहक के तौर–तरीकों, पसंद या आदतों से स्वयं को परेशान या विचलित न होने दें

प्रभावी ढंग से बोलना संवाद प्रक्रिया की एक और महत्वपूर्ण श्रृंखला है। एक प्रभावी वक्ता वह होता है जो सही ढंग से जानकारी देता है, शब्दों का सही उच्चारण करता है, सही शब्दों का चयन करता है और सही गति से बोलता है जिससे बात आसानी से समझ में आ सके। इसके अलावा, बोले गए शब्द, बोलने वाले के हाव–भाव, टोन और बॉडी लैंग्वेज से मेल खाने चाहिए। आप जो कहते हैं और जिस स्वर में आप अपनी बात कहते हैं, उसके परिणामस्वरूप कई धारणाएं बनती हैं। एक व्यक्ति जो झिझक से बोलता है, उसे कम आत्मसम्मान या विषय के ज्ञान की कमी के रूप में माना जा सकता है। बीच में बात को छोड़ने वालों को शर्मीला माना जा सकता है। जो स्पष्टता के साथ कमांडिंग टोन में बोलते हैं, उन्हें आमतौर पर बेहद आत्मविश्वासी माना जाता है। ग्राहकों से प्रभावी ढंग से बात करने के लिए :

- बोलते समय सही शारीरिक हाव–भाव (बॉडी लैंग्वेज) उपयोग करें जैसे आँखों का संपर्क, मुस्कुराना, सिर हिलाना, इशारे करना आदि।
- बोलने से पहले सोचें
- अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखें
- बोलते समय सुखद और प्राकृतिक स्वर का प्रयोग करें। आपके ग्राहक को यह महसूस नहीं होना चाहिए कि आप किसी भी तरह से असहज हैं।
- संक्षेप में बोलें। कोई अनावश्यक जानकारी न जोड़े।
- स्पष्ट रूप से और विनम्रता से बोलें ताकि ग्राहक आसानी से समझ सके कि आप क्या कहना चाह रहे हैं।

- जब भी आवश्यकता हो, 'कृपया', 'धन्यवाद', 'आपका स्वागत है', 'क्षमा करें', 'मुझे क्षमा करें' आदि जैसे जादुई शब्दों का प्रयोग करें।

नेतृत्व : नेतृत्व एक सॉफ्ट स्किल है जिसे आप दिखा सकते हैं भले ही आप दूसरों को सीधे तौर पर मैनेज न करते हुए या एक या दो कर्मचारियों को मैनेज करते हुए भी दिखा सकते हैं। नेतृत्व को अन्य विभिन्न सॉफ्ट स्किल का संग्रह माना जा सकता है, जैसे एक सामान्य सकारात्मक दृष्टिकोण रखना, प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता, और स्वयं को प्रेरित होने और दूसरों को प्रेरित करने की योग्यता। आपका नेतृत्व कौशल आपके व्यवसाय का भविष्य तय करेगा।

समस्या का समाधान करना : किसी अन्य पेशे की तरह अगरबत्ती निर्माताओं को भी दिन प्रतिदिन के व्यवसाय में समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इन समस्याओं को हल करने की क्षमता भी एक सॉफ्ट स्किल मानी जाती है। सभी समस्याओं में दो तत्व होते हैंः लक्ष्य और बाधाएँ। समस्या समाधान का उद्देश्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बाधाओं को पहचानना और उन्हें दूर करना है। किसी समस्या को हल करने के लिए तर्कसंगत सोच के एक स्तर की आवश्यकता होती है। इसके लिए न केवल विश्लेषणात्मक, रचनात्मक और महत्वपूर्ण कौशल की आवश्यकता है, बल्कि एक विशेष मानसिकता भी अपेक्षित है। जो लोग शांत और संतुलित दिमाग से समस्या को लेते हैं वे अकसर उन लोगों की तुलना में अधिक कुशलता से समस्या का समाधान निकाल लेते हैं, जो ऐसा नहीं करते। कोई समस्या आती है तो उसका सामना कैसे किया जाए, के बारे में कुछ तार्किक उपाय निम्नानुसार हो सकते हैं :

- समस्या को पहचानें
- समस्या का विस्तार से विश्लेषण करें
- सभी संभव समाधानों के बारे में विचार करें
- समाधान का चयन करें। यदि आप उचित समझें तो अपने कर्मचारियों और मित्रों की राय लें।
- चयनित समाधान को कार्यान्वित करें
- यह देखें कि क्या समस्या का समाधान वास्तव में हुआ है।

कुछ व्यक्तिगत गुणों की भी समस्याओं के प्रभावी समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे –

- खुले विचारों का होना
- बातचीत की पहल करना
- बातों से परेशान न होना
- सकारात्मक दृष्टिकोण रखना
- सही समस्या पर ध्यान केन्द्रित करना आदि।

गतिविधिः मेरे सिलाई व्यवसाय का वित्तपोषण

- प्रशिक्षक उन विभिन्न कारकों के बारे में बताएगा जो व्यवसाय में किसी उत्पाद की विक्री को प्रभावित करते हैं।
- प्रत्येक प्रतिभागी उन विचारों या आइडिया की सूची बनाएंगे जिससे उनकी व्यवसाय बढ़ सकती है और उनके उत्पाद के खरीदारों के साथ बातचीत किया जा सकता है।
- उनमें से प्रत्येक अपनी रणनीति समूह के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे।
- प्रशिक्षक और प्रतिभागी, सभी प्रतिभागियों द्वारा सुझाए गए विचारों या आइडिया पर अपनी टिप्पणी करेंगे।

सत्र 18:

क्षेत्र के दौरे में जाने की तैयारी करना

इस दौरे का उद्देश्य सिलाई की दुकान चलाने वाले लोगों से मिलना और उनसे उनके दुकान शुरू करने और चलाने के अनुभवों के बारे में बात करना है। प्रतिभागी मिलनेवाले दुकानदारों से कई तरह के प्रश्न पूछ सकती हैं जैसे कि उन्हें दुकान शुरू करने के लिए कितने निवेश की जरूरत पड़ी, उन्होंने सिलाई की दुकान शुरू करने के बारे में ही क्यों सोचा, वे ग्राहकों को अपनी दुकान की ओर आकर्षित करने के लिए क्या करते हैं, वे दुकान के लिए आवश्यक सामान कहाँ से खरीदते हैं, सिलाई मशीन कितने दाम में खरीदे थे, वे विभिन्न सामानों का बिक्री मूल्य या सेवा कैसे तय करते हैं, वो महीना में लगभग कितना कमा लेते हैं, किराने की दुकान को चलाने में उनके सामने मुख्य चुनौति क्या रहती है और क्या वे उन्हें कोई सलाह देना चाहेंगे आदि।

गतिविधिः

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को इस दौरे का उद्देश्य ठीक से समझा देंगे
- प्रतिभागी दो–दो के जोड़े में एक छोटा नाटक तैयार करेंगे। इनमें एक प्रतिभागी दरजी या सिलाई दुकान के मालिक बनेंगी और दूसरी दौरे पर जाने वाला प्रतिभागी बनेंगी। वे दरजी या सिलाई दुकान के मालिक को अपना परिचय किस प्रकार देंगे आदि बातों की तैयारी पहले से कर लेंगे
- प्रतिभागी इस नाटक के द्वारा अपनी तैयारी का प्रदर्शन करेंगी
- प्रशिक्षक उन्हें पूछे जाने के लिए प्रश्न और बातचीत का तरीका सुझा सकते हैं
- प्रतिभागी नाटक पर मिली प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपने प्रश्नों में सुधार ला सकती हैं
- प्रशिक्षक अगले दिन के दौरे पर जाने के कार्यक्रम को सबके साथ साझा कर लेंगे

छठा दिन

सत्र 19:

दुकानदारों के पास जाना और उनसे बातचीत करना

- प्रतिभागी विभिन्न सिलाई की दुकानों पर व्यक्तिगत रूप से जाएंगी और दुकानदारों से दुकान चलाने में उनके अनुभवों के बारे में बातचीत करेंगे। वे टेलरिंग व्यवसाय के प्रबंधन से संबंधित कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं जैसे कि वे ग्राहकों को अपनी दुकान से सेवा लेने के लिए कैसे आकर्षित कर सकते हैं। वे रेडीमेड कपड़ों की सिलाई में क्या लाभ मार्जिन है और स्थानीय दुकानों या थोक विक्रेताओं को आपूर्ति करने में क्या मार्जिन हैं, एक सिलाई की दुकान चलाने में चुनौतियां क्या हैं, क्या वहाँ अनुकूलित सिलाई वाले कपड़ों की पर्याप्त माँग है, किन प्रकार की सिलाई पोशाक की अच्छी माँग है।
- वे बातचीत के दौरान दुकान के सजावट, दुकान में सामानों को सुरक्षित, व्यवस्थित एवं सुंदर तरीके से कैसे रखना और संभालना आदि के बारे मे गौर करेंगे।

- वे बातचीत के दौरान महत्वपूर्ण बातों को कॉपी में लिख लेंगे ताकि उसके बारे में चर्चा किया जा सके।
- वे सिलाई सामग्री की दुकान पर जा सकते हैं और सिलाई की दुकान में उपयोग की जाने वाली विभिन्न चीजों की कीमत के बारे में पूछताछ कर सकते हैं जैसे सिलाई मशीन, धागे के थोक मूल्य, बटन, जिप, पैटर्न बनाने के कागज, आदि। वे यह भी पूछेंगे कि क्या उन्हें ये सामग्री कुछ रियायती मूल्य में मिल सकती है।

क्षेत्र के दौरे से मिली सीख का निष्कर्ष निकालना ।

प्रतिभागी जोडे में दिन भर क्षेत्र के दौरे में दुकानदारों के साथ बातचीत के दौरान मिली जानकारी पर चर्चा कर निष्कर्ष निकालेंगे।

प्रत्येक प्रतिभागी –

- क्षेत्र के दौरे के सीख एवं अपने विचारों को अपने साथी को प्रस्तुत करेंगे।
- सीखी गयी बातों के आधार पर अपनी 'सिलाई की दुकान खोलने एवं चलाने' की व्यवसाय के बारे में उन्हें क्या–क्या जानकारियां मिली उस पर एक लेख प्रस्तुत करेंगे।

सातवां दिन

सत्र 20:

क्रॉस लिस्ट को देखना और उसका विश्लेषण करना

- प्रत्येक प्रतिभागी क्रॉस लिस्ट को देखेंगे और प्रशिक्षण की प्रगति के बारे में चर्चा करेंगे।

क्षेत्र के दौरे का अनुभव साझा करना

- प्रतिभागी अपने चार दिन के क्षेत्र भ्रमण के अनुभव को समूह में साझा करने की तैयारी करेंगे।
- प्रत्येक प्रतिभागी अपने अनुभव को सभी प्रतिभागियों के बीच साझा करेंगे।

सत्र 21:

बजट बनाना

अपनी सिलाई की दुकान शुरू करने की लागत निर्धारित करना

गतिविधि : 'मुझे कौन सी चीजों की आवश्यकता है?'

प्रतिभागी सिलाई की दुकान शुरू करने के लिए, उन्हें क्या–क्या सामान चाहिए, इसकी सूची बनाएंगी

- प्रशिक्षक प्रत्येक प्रतिभागी को एक–एक कागज का टुकड़ा वितरित करेंगे
- प्रत्येक प्रतिभागी को अपनी सिलाई की दुकान की शुरूआत करने के लिए क्या चाहिए वे इसकी एक सूची बनाएंगी
- प्रत्येक प्रतिभागी अपनी सूची को समूह के सामने प्रस्तुत करेंगी
- प्रशिक्षक नीचे दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए उनकी सूची में कुछ और सामान जोड़ने की सलाह दे सकते हैं

आइए डली की उदाहरण लेते हैं। वह अपनी एक सिलाई की दुकान खोलना चाहती हैं। उसने ने अपनी सिलाई की दुकान के लिए जरूरी सामान की सूची बनाई, जो इस प्रकार है :

1. एक कमरा
2. दो रेक्स
3. कपड़ा काटने के एक मेज
4. तिन सिलाई मशीन
5. एक ओवरलॅक मशीन
6. कैंचियां,
7. आइरन, हेंगर
8. फर्निचर सेट
9. कच्चे माल जैसे अस्तर कपड़े, बटन, हुक, जिप, सिलाई धागे आदि।
10. अपने सिलाई की दुकान का एक साइन बोर्ड

गतिविधि : 'मुझे कौन सी चीजों की आवश्यकता है?'

प्रतिभागी सिगतिविधि : 'प्रत्येक वस्तु के लिए मुझे कितने धन की आवश्यकता होगी?'

- प्रतिभागी अपनी सूची में शामिल प्रत्येक वस्तु की कीमत लिखेंगी
- प्रतिभागी इस बात का भी ध्यान रखेंगी कि क्या उन्हे कुछ सामान बिना पैसा खर्च किए या कम दाम में मिल सकता है
- प्रत्येक प्रतिभागी अपनी शुरूआती लागत को समूह में प्रस्तुत करेंगी
- समूह प्रस्तुतियों पर अपनी राय देकर चर्चा को समेकित करेंगे

निश्चित और अनिश्चित मासिक खर्चों का आकलन करना

निश्चित मासिक लागत (खर्चों) में किराया, सुविधाएँ, फोन, प्रचार आदि शामिल हो सकते हैं। अनियमित मासिक लागत (खर्चों) में सिलाई और परिवहन के लिए उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल की खरीद खर्चों और डिलीवरी रेडीमेड वस्त्र आदि शामिल हो सकते हैं।

गतिविधि : 'मेरे व्यवसाय में निश्चित और अनियमित मासिक खर्चे'

- प्रशिक्षक सभी प्रतिभागियों में कागज का एक–एक टुकड़ा वितरित करेंगे। वह बताएगा की सिलाई की दुकान के लिए निश्चित और अनियमित लागत क्या होते हैं।
- प्रतिभागी कागज पर दो खाने बना कर अपने व्यवसाय की मासिक निश्चित और अनियमित लागत का हिसाब दर्ज करेंगी

- दो प्रतिभागी अपनी अनुमानिक लागत को प्रस्तुत करेंगी। समूह उनकी प्रस्तुति को ध्यान से सुनेगा और यदि उनसे कोई बात छूट गई है या गलत आकलन किया है तो उस ओर उनका ध्यान दिलाएगा

मेरी सिलाई की दुकान से होने वाली मासिक आय का आकलन

गतिविधि : 'मेरी मासिक आय'

- प्रत्यके प्रतिभागी अपनी सिलाई की दुकान से होनेवाले आय का मासिक आकलन तैयार करेंगी। वे इस आकलन को तैयार करने में अपनी जोड़े के साथी की मदद भी ले सकती हैं।
- प्रत्येक प्रतिभागी विभिन्न सिलाई सेवाओं जो वे प्रदान करना चाहते है, उनका एक मूल्य तय करेंगे जो वे क्षेत्र भ्रमण के दौरान सिलाई दुकान मालिकों और सिलाई सामग्री विक्रेताओं के साथ कीमत के बारे में बातचीत का विश्लेषण करके किये हैं।
- इस बार दो अन्य प्रतिभागी अपने मासिक आय के आकलन को प्रस्तुत करेंगी।

'सारे पहलुओं को एक साथ रखना'

शुरुआत की लागत, निश्चित और अनियमित मासिक खर्चों और बिक्री के आकलन को एक साथ रख कर हम अपने व्यवसाय का बजट बना सकते हैं।

गतिविधि : 'सारे पहलुओं को एक साथ रखना'

- प्रशिक्षक सभी प्रतिभागियों को छमाही बजट के प्रारूप की एक–एक प्रति वितरित कर दें। प्रतिभागी दो–दो के जोड़े या तीन–तीन के समूह (ट्रीयो) में इस प्रारूप को पूरा करने का काम करेंगी
- प्रत्येक प्रतिभागी अपने आकलन को इस तरह के खानों में दर्ज करेंगी

सत्र 22:

'अपनी सिलाई की दुकान के लिए व्यवसाय योजना बनाना'

आधारभूत उद्यमिता और कौशल प्रशिक्षण (फेस्ट FEST) के दौरान प्रतिभागी छोटे व्यवसाय या लघु उद्यम के लिए व्यवसाय योजना बनाना पहले ही समझ चुके हैं। यहां वे खासतौर से ' सिलाई की दुकान खोलने और चलाने' के लिए व्यवसाय योजना बनाएंगे।

गतिविधि : 'मेरी व्यवसाय योजना'

- प्रशिक्षक सभी प्रतिभागियों को व्यवसाय योजना का खाका वितरित करेंगे और डली की व्यवसाय योजना के आधार पर वे इस प्रारूप को प्रतिभागियों को समझाएंगे
- प्रत्येक प्रतिभागी अपनी व्यवसाय योजना बनाएंगी और इसे बनाने में प्रतिभागी एक–दूसरे की सहायता भी कर सकती हैं
- प्रतिभागी अब तक की गई सभी गणनाओं का इसमें इस्तेमाल करेंगी
- प्रत्येक प्रतिभागी अपनी व्यवसाय योजना प्रस्तुत करेंगी और अन्य सभी चर्चा में भागीदारी करेंगी
- चर्चा को समेकित करने के लिए प्रशिक्षक अपनी ओर से आवश्यक बिंदु को शामिल करें

आइए डली की व्यवसाय योजना पर एक नजर डालते हैं:

व्यवसाय योजना		
1	व्यवसायी महिला का नाम	डली
2	व्यवसाय का नाम और प्रकार	डली सिलाई दुकान
3	पता	रेलवे स्टेशन, टिटिलागढ़, जिला: बलांगीर, राज्य: ओड़िसा
4	प्रतिमाह बिक्री........ (अ)	रुपए 1,35,000
5	प्रतिमाह निश्चत लागतों जैसे किराया, बिजली का बिल आदि के अलावा प्रतिमाह होने वाले अन्य खर्च....... (ब)	रुपए 1,02,000
6	बिक्री में से अन्य खर्च घटाने पर कुल........ (अ–ब)	रुपए 33,000
7	निश्चित लागत ... (द) प्रतिमाह	रुपए 2,500
8	मुनाफा ... प्रतिमाह (अ–ब–द)	रुपए 30,500
9	ऋण की आवश्यकता	रुपए 30,000
10	ब्याज का खर्च ... (य) प्रतिमाह	रुपए 1500
11	ब्याज के बाद लाभ.... (मुनाफा–प) प्रतिमाह	रुपए 29,000

सत्र 23:
अपने पैसे का हिसाब–किताब रखना

किसी भी व्यवसायी के लिए यह हिसाब–किताब रखना बहुत जरूरी है कि उनका व्यवसाय फायदे में चल रही है या नुकसान में जा रही है। जब आपको सही स्थिति की जानकारी होती है तो आप व्यवसाय को बढ़ाने के लिए उसमें आवश्यक बदलाव कर सकते हैं।

आइए दो कहानियों के जरिए दो स्थितियों का समझने का प्रयास करते हैं

कहानी 1 :

''राधिका उड़ीसा में खमपाड़ा, पाटनागढ़ की रहने वाली हैं। उनके परिवार में वे, उनके पति और पाँच अन्य सदस्य हैं। उन्होंने एक सिलाई की दुकान खोली। यह गाँव में किराने की अेकली दुकान थी, इसलिए जल्दी ही दुकान अच्छे से चलने लगी। वो ग्राहकों द्वारा सिले जाने वाले पोशाकें जो उधार में करती थीं उनका का तो हिसाब रखती थीं, लेकिन दुकान में काम करनेवालों के लिए चा और नास्ते जैसे सामान लाया जाता था, या परिवार के लिए जो खर्च होता था, उनका हिसाब नहीं रख पाती थीं। इसके कारण उनके दुकान के नकदी के प्रवाह पर फर्क पड़ने लगा। उन्हें इसका अनुमान नहीं हो पाता था कि उन्हें दुकान से कितना मुनाफा हो रहा है और क्या उनका व्यवसाय मुनाफे में चल रहा है या नहीं। वे अपनी आर्थिक स्थिति का ठीक से आकलन नहीं कर पाई, कईबार उनके पास दुकान के लिए सामान खरिदने के लिए भी पैसों की कमी होने लगी और कुछ दिन बाद उन्हें अपना व्यवसाय बंद करना पड़ा।''

कहानी 2 :

सरिता, एक अन्य महिला हैं। यह भी एक सिलाई की दुकान चलाती थीं और उनका व्यवसाय अच्छा चल रहा था। दिन–ब–दिन उनकी दुकान में बिक्री बढ़ती जा रही थी। उनका दस लोगों का लंबा–चौड़ा परिवार था। उनकी यह अच्छी आदत थी कि वे रोजाना ग्राहको से प्राप्त हर पैसों का हिसाब लिखित रूप से रखती थी , ग्राहक के उधार और दुकान में पीछे बचे सामान को बहीखाता में लिख लेती थीं। वे रोजाना दुकान में काम करनेवालों को दिए गये पैसों और घर के लिए खर्च किए गये खर्चें भी दर्ज कर लेती थीं। इससे उन्हें हर दिन के अपने व्यवसाय के उतार–चढ़ाव की पूरी जानकारी रहती थी। वे लंबे समय तक अपनी सिलाई की दुकान का सफलता पूर्वक संचालन करती रह सकीं।

- प्रतिभागी दो समूहों में एक–एक कहानी पढ़ेंगे
- प्रत्येक समूह निम्न बिंदुओं पर चर्चा करेगा
    - उपरोक्त कहानी में क्या हुआ? क्या किराने की दुकान चलाने का यह तरीका उचित है? क्या इस तरह से दुकान मुनाफे में चलेगी या नुकसान में चलेगी? क्या आप इस के लिए कोई बदलाव सुझा सकते हैं?
- प्रत्येक समूह बारी–बारी से एक–एक प्रश्न के बारे में अपना प्रस्तुति देगा और बाकी समूह उस पर चर्चा करेगा।
- प्रशिक्षक व्यवसाय चलाने से जुड़ी अच्छी आदतों के बारे में बात करते हुए नीचे दिए गए बिंदुओं को सूचीबद्ध करावाएंगे और सत्र को समेकित करेंगे। यह सूची इस प्रकार है : प्रतिदिन का हिसाब दर्ज करना, धन को सुरक्षित जगह पर रखना, जहाँ तक संभव हो उधार देने से बचना, लंबे समय से चले आ रहे उधार की उगाही करना, आय और व्यय पर लगातार नज़र रखना आदि।

तो आइए सीखते हैं कि हम जो पैसा कमाते हैं उसका हिसाब–किताब कैसे रखें। अपने व्यवसाय की निगरानी के लिए नीचे दिए गए कदम मददगार हो सकते हैं :

- एक सप्ताह में कितना पैसा आया उसे गिनना
- सामान खरीदने के लिए कितने पैसे का भुगतान किया गया उसकी गणना
- नियमित खर्चों पर कितने का भुगतना किया गया इसकी गणना
- ग्राहकों के पास कितना उधार बकाया है इसका हिसाब रखना
- थोक व्यापारी का कितना धन बकाया है इसका हिसाब रखना
- सप्ताह के अंत में कितना पैसा बचा इसका हिसाब रखना
- इस पैसे को कैसे इस्तेमाल करना है यह निर्णय करना

आपका व्यवसाय मुनाफे में चल रहा है या घाटे में इसका अनुमान करने का एक बेहतरीन तरीका यही है कि उसका साप्ताहिक हिसाब रखा जाए।

गतिविधि : 'मेरे पास...............'

- प्रशिक्षक इसे उपरोक्त उदाहरण की सहायता से समझाएंगे
- प्रशिक्षक गणना के लिए सभी प्रतिभागियों में प्रारूप वितरित कर देंगे
- प्रतिभागी अपनी–अपनी कल्पना कर गणना करेंगे
- प्रत्येक प्रतिभागी अपने द्वारा की गई गणना को समूह में प्रस्तुत करेंगे

निर्णय लेना कि अपने धन का कैसे उपयोग करें

अब हमारे पास सप्ताह के अंत में बची शेष राशि है। इस धन का हमें क्या करना है यह निर्णय करने के लिए हमें निम्न बातों का ध्यान रखने की जरूरत है

- किराया और बिजली के बिल आदि जैसे मासिक खर्चों के लिए कितनी राशि की बचत करने की जरूरत है?
- अगले सप्ताह सामान खरीदने के लिए कितनी राशि की जरूरत होगी ?
- नियमित खर्चों के लिए कितनी राशि की आवश्यकता होगी ?
- भविष्य के लिए कितनी राशि की बचत करने की आवश्यकता है ?
- स्वयं अपने और परिवार के लिए कितनी राशि का इस्तेमाल किया जा सकता है ?

गतिविधि : ''मैं अपने धन का कैसे सही उपयोग करूं?''

- प्रशिक्षक उपरोक्त प्रश्नों के आधार पर शेष राशि के इस्तेमाल के बारे में समझाएंगे
- प्रतिभागी उपरोक्त प्रश्नों के आधार पर समूह में चर्चा करेंगे कि इनमें से क्या करना सही है और क्यों

सत्र 24:
प्रशिक्षण का समापन

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों से प्रशिक्षण के अनुभव एवं सीख को साझा करने के लिए कहेंगे।
- प्रतिभागी यह बताएंगे कि उन्होंने प्रशिक्षण से क्या सीखा और इसका उपयोग वे अपनी सिलाई व्यवसाय में कैसे करेंगे।
- प्रशिक्षक अपनी समापन टिप्पणी प्रदान करेंगे और सभी प्रतिभागियों के लिए ताली बजाकर प्रशिक्षण सत्र का समापन करवाएंगे।

प्रशिक्षण के लिए आवश्यक सामग्री

- एक बोर्ड और कुछ चॉक
- प्रशिक्षण के दौरान अभ्यास करने के लिए सिलाई पैटर्नस डिज़इन
- प्रशिक्षण के दौरान व्यवहार करने के लिए सिलाई मशीन एवं अन्य सामग्री
- नोटबुक और पेन

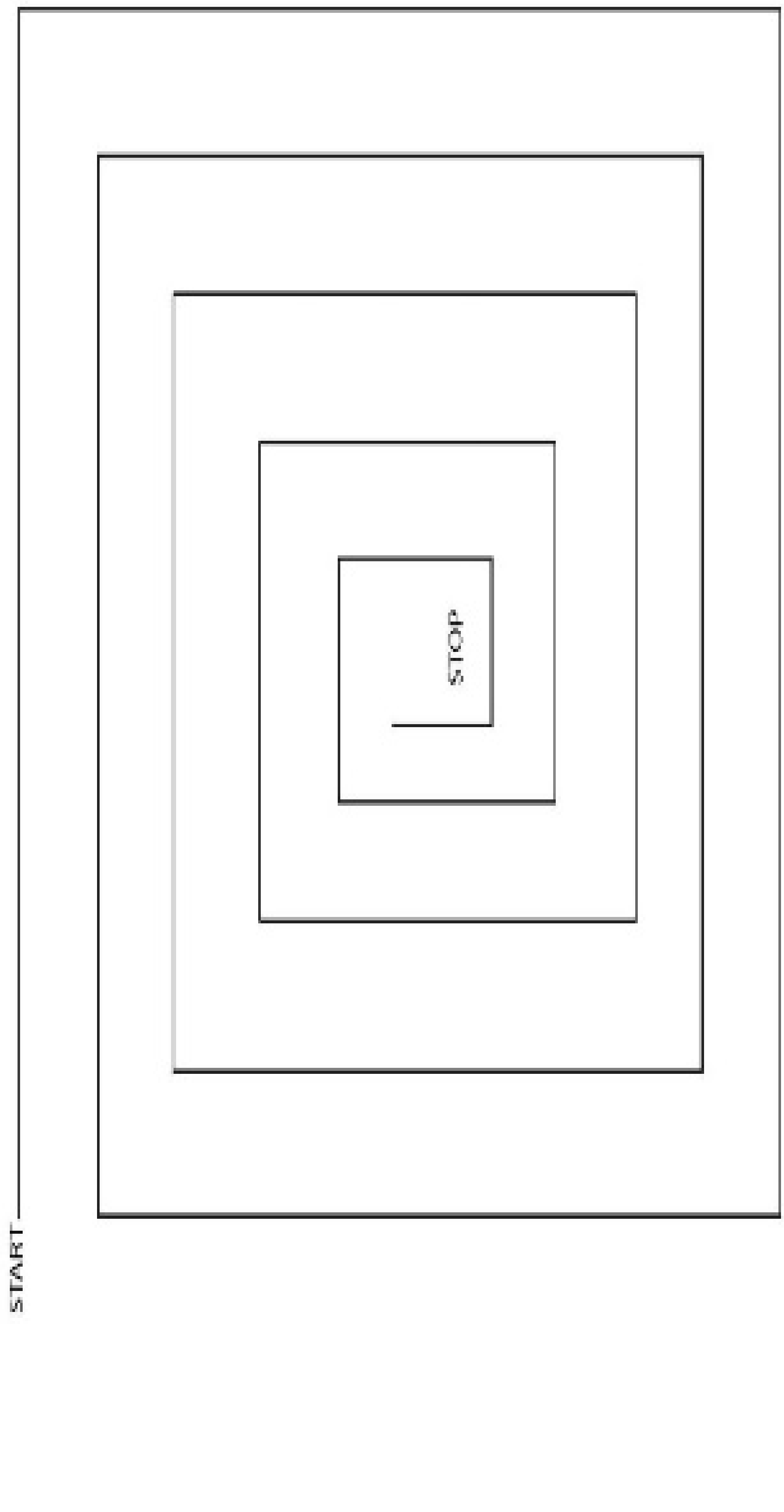
START
STOP

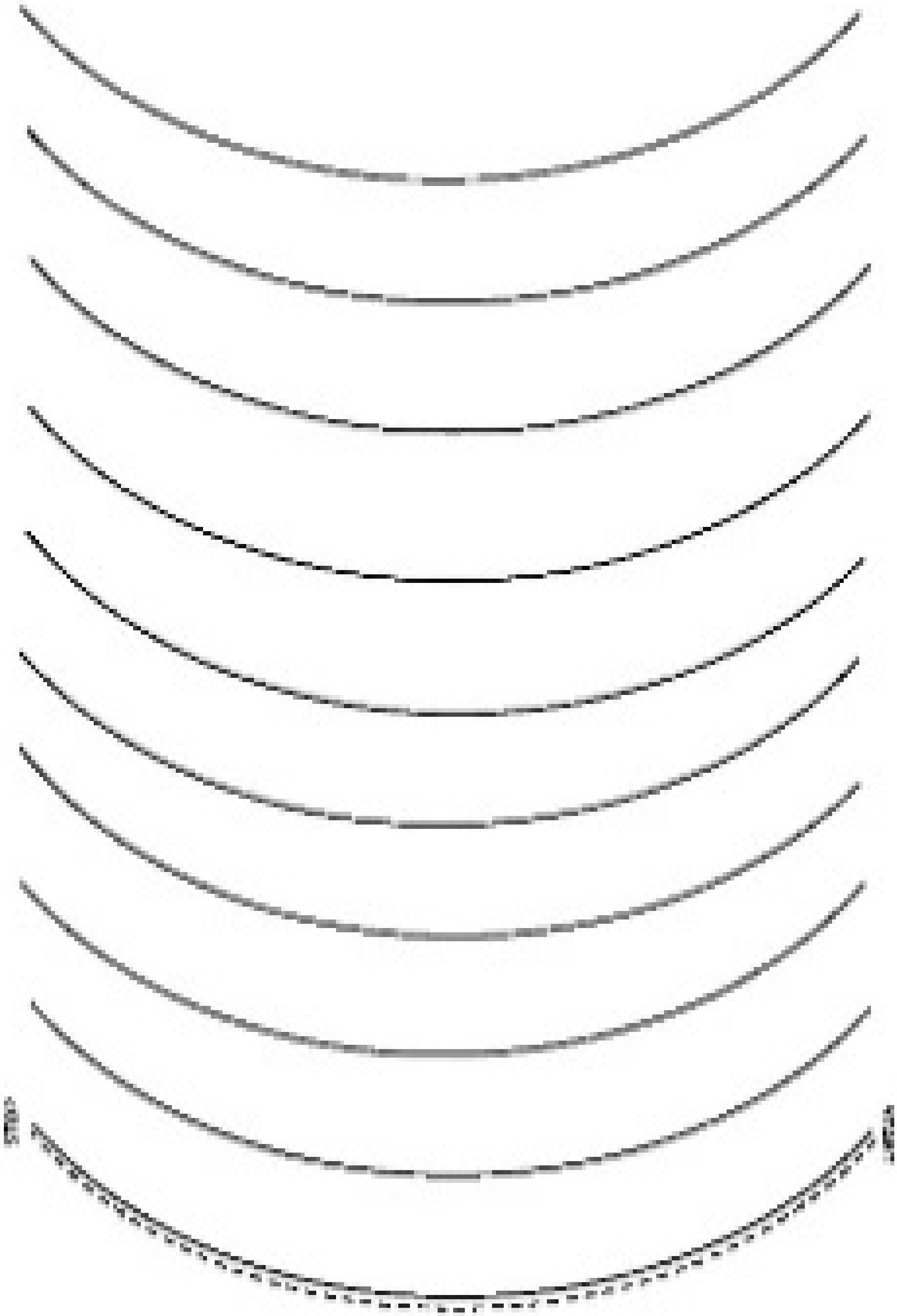

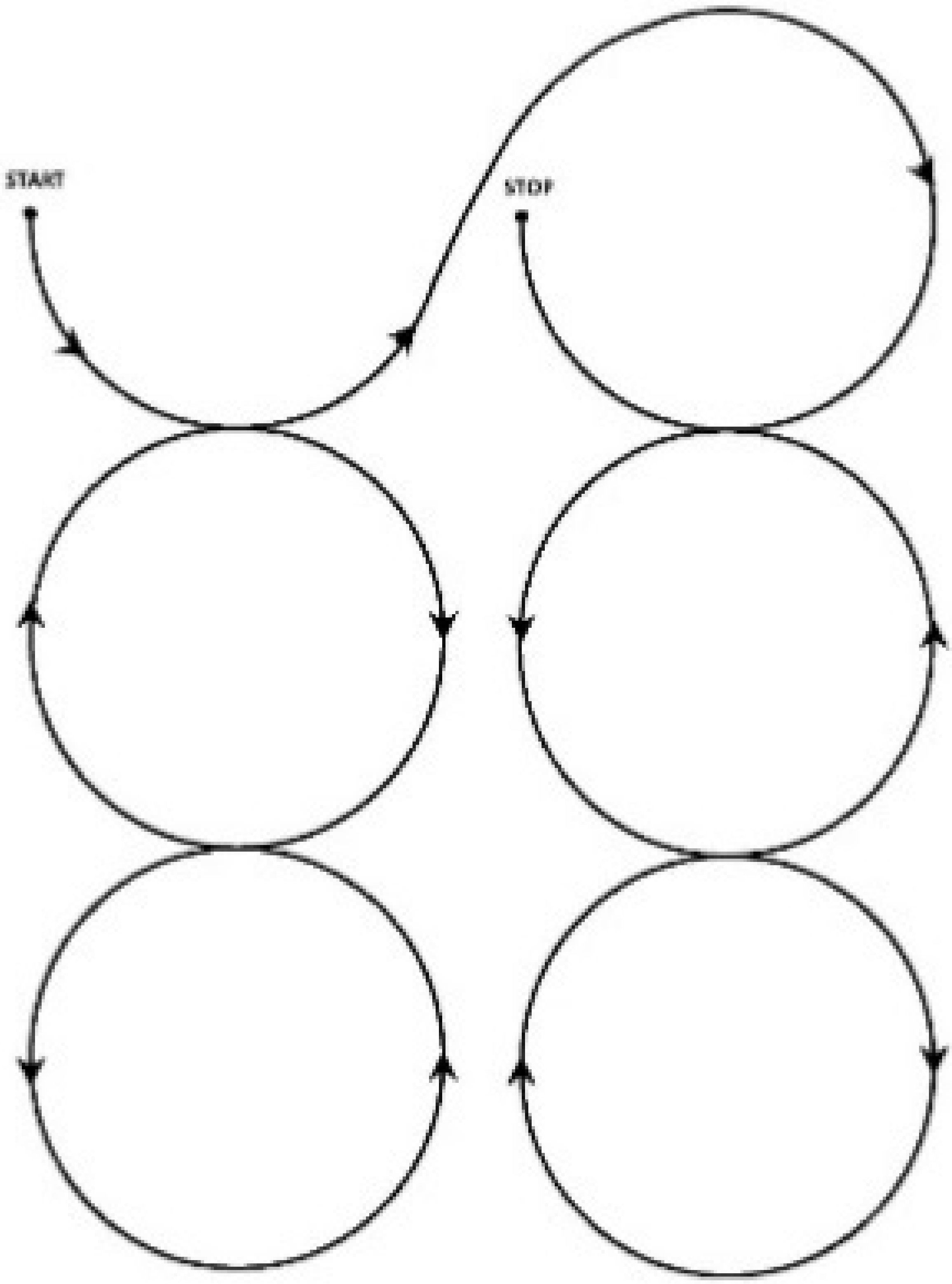
START
STOP

HUMANA
PEOPLE TO PEOPLE INDIA

111/9-Z, Kishangarh, Vasant Kunj, New Delhi-110070
Telephone & Fax: 011- 47462222
E-mail: info@humana-india.org Website: www.humana-india.org

Registered under Section 25 of the Companies Act, 1956. CIN. : U85320DL1998NPL093972
Registration No. 55-93972; FCRA Registration No. 231660194
Tax exemption under Section 80 G of the Income Tax Act, 1961

www.facebook.com/humana.india
www.twitter.com/Humana_India
www.instagram.com/humanaindia/
www.youtube.com/user/HumanaPeopleIndia
www.linkedin.com/company/humana-people-to-people-india/